# शमूएल की पुस्तक

अध्याय 2

## शमूएल और शाऊल

Manuscript

thirdmill

Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2021के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

## थर्ड मिलेनियम के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

**संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।**

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडियो अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट्स भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं और हमारे अध्यायों के लिए अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती हैं, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं, संस्थानों, व्यापारों और लोगों के उदार, टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

# विषय-वस्तु

प्रस्तावना....1
राजशाही के लिए शमूएल की प्रस्तावना....2
संरचना और विषयवस्तु....2
शमूएल के शुरूआती वर्ष (1 शमूएल 1:1–2:11)।....3
नेतृत्व में बदलाव (1 शमूएल 2:12–7:17)।....6
मसीही अनुप्रयोग....10
परमेश्वर की वाचाएँ....10
परमेश्वर का राज्य....11
शाऊल की असफल राजशाही....13
संरचना और विषयवस्तु....13
शाऊल के शुरूआती वर्ष (1 शमूएल 8:1–15:35)।....14
नेतृत्व में बदलाव (1 शमूएल 16:1–2 शमूएल 1:27)।....19
मसीही अनुप्रयोग....27
परमेश्वर की वाचाएँ....27
परमेश्वर का राज्य....29
उपसंहार....31

# शमूएल की पुस्तक

अध्याय दो

**शमूएल और शाऊल**

## प्रस्तावना

एक गाइड की कहानी बताई जाती है जिसने एक लंबी यात्रा पर पुरुषों के एक समूह की अगुवाई की। पहले दिन के अंत पर, एक जवान पुरुष ने यह शिकायत की। "यह बहुत समय ले रहा है," उसने कहा। "शायद हम गलत दिशा में चले गए हैं।" लेकिन गाइड निश्चिन्त रहा। उसने अपना नक्शा निकाला और पूरे समूह को दिखाया कि वे उस दिन कहाँ तक आ गए थे। आपने देखा, उसने उन्हें आश्वासन दिया, "हमने निश्चित रूप से सही मार्ग अपनाया है।"

कई तरह से, शमूएल के लेखक ने भी जब उसने अपनी पुस्तक को लिखा तो ऐसा ही किया। उसके समय में, इस्राएल में कईयों ने सोचा कि जब दाऊद उनका राजा बना तो क्या उनके पूर्वज गलत दिशा में चले गए थे। इन वर्षों के दौरान, दाऊद के घराने ने इस्राएल के लिए बहुत सारे कष्टों को ला दिया था। लेकिन शमूएल का लेखक आश्वस्त रहा। उसने उन लोगों को जिन्होंने पहली बार उसकी पुस्तक को प्राप्त किया था, याद दिलाया कि उन्होंने निश्चित रूप से सही मार्ग अपनाया है। उसने उन्हें यह आश्वस्त करने के लिए लिखा कि जो मार्ग दाऊद की राजशाही का कारण बना उस मार्ग पर स्वयं परमेश्वर ने उनकी अगुवाई की थी।

हमारी श्रृंखला *शमूएल की पुस्तक* का यह दूसरा अध्याय है, और हमने इसका शीर्षक रखा है, "शमूएल और शाऊल।" इस अध्याय में, हम देखेंगे कि कैसे हमारी पुस्तक के पहले दो प्रमुख विभाजन यह सिखाते हैं कि शमूएल और शाऊल दोनों के जीवनों के दौरान परमेश्वर ने सही दिशा में इस्राएल की अगुवाई की थी। हम यह भी देखेंगे कि कैसे ये अध्याय मसीह के अनुयायियों के रूप में आज हमारे जीवनों पर लागू होते हैं।

आपको हमारे पिछले अध्याय से याद होगा कि शमूएल, शाऊल और दाऊद हमारी पुस्तक के तीन प्रमुख विभाजनों में प्रमुख स्थान ग्रहण करते हैं। सबसे पहले, हम 1 शमूएल 1–7 में राजशाही के लिए शमूएल की प्रस्तावना के विषय में पढ़ते हैं। फिर हम 1 शमूएल 8-2 शमूएल 1 में शाऊल की असफल राजशाही को पाते हैं। और अंततः 2 शमूएल 2–24 में हम दाऊद की स्थायी राजशाही के विषय में सीखते हैं।

शमूएल के लेखक ने अपनी पुस्तक को तब लिखा जब या तो विभाजित राजशाही या बेबीलोन की बंधुवाई के दौरान इस्राएल ने गंभीर क्लेशों का सामना किया। और उसके पास उन लोगों से कहने के लिए बहुत कुछ था जिन्होंने सबसे पहले इन मुश्किल समयों में उसकी पुस्तक को प्राप्त किया। अपने पिछले अध्याय में हमने उसके सर्वव्यापक उद्देश्य को इस रीति से सारांशित किया था:

> शमूएल के लेखक ने समझाया कि किस प्रकार राजशाही के लिए इस्राएल का बदलाव दाऊद के साथ परमेश्वर की वाचा में परिपूर्ण हुआ, ताकि इस्राएल दाऊद के घराने के धर्मी शासन में परमेश्वर के राज्य के लिए अपनी आशाओं को रखेगा।

एक ओर शमूएल का लेखक चाहता था कि परमेश्वर की वाचाओं की गतिशीलताओं के संदर्भ में उसके मूल श्रोता अतीत की ओर देखें। विशेष रूप से, वह उसने चाहता था कि वे देखें कि राजशाही के लिए इस्राएल का बदलाव दाऊद के साथ परमेश्वर की वाचा में परिपूर्ण हुआ। और दूसरी ओर, उसने दाऊद के घराने के धर्मी शासन में परमेश्वर के राज्य के भविष्य के लिए अपनी आशाओं को बनाए रखने हेतु अपने श्रोताओं को बुलाहट देने के द्वारा परमेश्वर के राज्य पर ध्यान केंद्रित किया। इस अध्याय में, हम



चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट http://thirdmill.org/ पर जाएं।

देखेंगे कि कैसे ये दोतरफा उद्देश्य शमूएल एवं शाऊल के विषय हमारी पुस्तक के विवरण में सामने की ओर आते हैं।

शमूएल और शाऊल के जीवनों की हमारी खोज दो मुख्य भागों में विभाजित होगी। सबसे पहले, हम 1 शमूएल 1–7 में राजशाही के लिए शमूएल की प्रस्तावना पर विचार करेंगे। फिर हम 1 शमूएल 8-2 शमूएल 1 में शाऊल की असफल राजशाही की ओर जाएंगे। ये दोनों विभाजन हमारे लेखक के सर्वव्यापक उद्देश्य को बढ़ाने के लिए महत्वपूर्ण थे। आइए 1 शमूएल 1–7 में राजशाही के लिए शमूएल की प्रस्तावना के साथ शुरू करते हैं।

# राजशाही के लिए शमूएल की प्रस्तावना

न्यायियों की पुस्तक के अंतिम अध्याय बताते हैं कि उत्तरी गोत्रों के क्षेत्रों में विश्वासघाती लेवियों ने परमेश्वर के खिलाफ विद्रोह में इस्राएल की अगुवाई की। न्यायियों के लेखक ने समझाया कि एक मुख्य कारण से ऐसा हुआ। जैसा कि उसने अपनी पुस्तक के अंत में चार बार यह कहा, “उन दिनों में इस्राएलियों का कोई राजा न था। जिसको जो ठीक जान पड़ता था वही वह करता था।” इस पृष्ठभूमि के प्रकाश में, यह आश्चर्य की बात नहीं कि हमारी पुस्तक शमूएल के जन्म के साथ शुरू होती है। शमूएल इस्राएल के उत्तरी क्षेत्रों से एक लेवी था जो राजशाही के युग में इस्राएल की अगुवाई करेगा।

हम दो मुख्य तरीकों से राजशाही के लिए शमूएल की प्रस्तावना का पता लगाएंगे। सबसे पहले, इसकी संरचना एवं विषयवस्तु की खोज करने के द्वारा हम अपनी पुस्तक के इस भाग के मूल अर्थ पर ध्यान केंद्रित करेंगे। और फिर, हम इन अध्यायों के मसीही अनुप्रयोग पर कुछ विचारों को प्रस्तुत करेंगे। आइए, शमूएल के इस पहले विभाजन की संरचना एवं विषयवस्तु के साथ शुरू करें।

## संरचना और विषयवस्तु

इससे पहले कि हम आगे बढ़ें, उन मुख्य विषयों का परिचय मदद करेगा, जिन्हें हम इन अध्यायों में देखने जा रहे हैं। सबसे पहले, हमारे लेखक ने परमेश्वर के राज्य पर ध्यान केंद्रित किया। शमूएल का लेखक और उसके मूल श्रोता दोनों ही यह जानते थे कि शमूएल ने, राजा के रूप में दाऊद का अभिषेक किया था, और इस्राएल में परमेश्वर के राज्य की अगुवाई के लिए दाऊद के घराने के लिए मंच तैयार कर दिया था। लेकिन, जैसा कि हमने पहले उल्लेख किया, जब तक हमारी पुस्तक लिखी गई थी, इस्राएल में कईयों ने इन प्रश्नों को उठाया कि क्या वे सही दिशा में आगे गए थे। इन वर्षों में, दाऊद के घराने ने परमेश्वर के लोगों के लिए अनगिनत समस्याएं पैदा की थीं। इसलिए, अपने श्रोताओं को आश्वस्त करने के लिए कि वे सही मार्ग पर थे, हमारे लेखक ने दिखाया कि कैसे स्वयं परमेश्वर ने दाऊद राजा का अभिषेक करने के ही उद्देश्य के लिए शमूएल को खड़ा किया था।

इस वास्तविकता की और पुष्टि के लिए, उसने दूसरे प्रमुख विषय पर ध्यान आकर्षित किया: मूसा के साथ परमेश्वर की वाचा की गतिशीलता। शमूएल के दिनों में, इस्राएल सिनै पर्वत पर परमेश्वर की वाचा की गतिशीलताओं के द्वारा प्रतिबद्ध था। शमूएल के लेखक ने बताया कि कैसे शमूएल के जीवनकाल के दौरान परमेश्वर ने इस्राएल को महान परोपकारिता दिखाई थी। उसने विशेष रूप से आराधना के लिए मूसा की व्यवस्था के संबंध में, मानवीय निष्ठा के लिए परमेश्वर की शर्त पर भी ध्यान केंद्रित किया। बार-बार, उसने वर्णन किया कि आराधना की प्रथा ने इतिहास में इस चरण पर उनकी नियति को कैसे आकार दिया था। और इससे भी अधिक, उसने इस बात पर प्रकाश डाला कि कैसे परमेश्वर ने आराधना के लिए ठहराई

गई मूसा की व्यवस्था की अवज्ञा के लिए अभिशाप एवं आज्ञापालन के लिए आशीषों को उँडेला था। इन तरीकों में मूसा के साथ परमेश्वर की वाचा पर ध्यान केंद्रित करने के द्वारा, हमारे लेखक ने राजशाही के लिए शमूएल की प्रस्तावना के परिणामों को स्वीकार करने हेतु अपने मूल श्रोताओं को बुलाहट दी। इस्राएल के लोग शमूएल द्वारा शुरू किए गए मार्ग पर चलने में सही थे, क्योंकि स्वयं परमेश्वर ने इसे स्थापित किया था।

एक बड़े पैमाने पर, राजशाही के लिए शमूएल की प्रस्तावना की संरचना एवं विषयवस्तु दो प्रमुख चरणों में आती है। यह 1 शमूएल 1:1–2:11 में शमूएल के शुरूआती वर्षों के साथ शुरू होती है। यह फिर 2:12–7:17 में एली और उसके पुत्रों से शमूएल के लिए लेविय अगुवाई में बदलाव की ओर बढ़ती है। शमूएल के शुरूआती वर्षों के दौरान, हमारे लेखक ने प्रकट किया कि, शमूएल के आगमन के साथ, परमेश्वर ने इस्राएल के लिए एक नए युग को शुरू किया।

## शमूएल के शुरूआती वर्ष (1 शमूएल 1:1–2:11)।

शमूएल के शुरूआती वर्षों का विवरण शमूएल के जन्म और शीलो में मिलाप वाले तम्बू पर परमेश्वर की आराधना के लिए उसके समर्पित किए जाने पर केंद्रित है। यह एकल कहानी 2:11 में एक संक्षिप्त निष्कर्ष के साथ 1 शमूएल 1:1-28 में प्रकट होती है। 2:1-10 में इस कहानी के भीतर हन्ना की स्तुति के गीत की एक लंबी प्रस्तुति सन्निहित है।

**जन्म और समर्पण (1 शमूएल 1:1-28; 2:11)।** जैसे कि हमने अपने पिछले अध्याय में चर्चा की थी, शमूएल के जन्म एवं समर्पण की कहानी हन्ना नामक एक महिला के साथ शुरू होती है। आपको याद होगा कि हन्ना के पति एल्काना, की दो पत्नियाँ थीं। पनिन्ना के कई बच्चे थे, लेकिन हन्ना बाँझ थी। उनका परिवार शीलो में मिलाप वाले तम्बू में नियमित रूप से वार्षिक मेलबलि में भाग लेता था। इन पर्वों पर, बच्चे न होने के कारण पनिन्ना, हन्ना का दुष्टता से उपहास करती थी। इसके अलावा, एल्काना हन्ना के दुःख को नहीं समझ पाता था और आपत्ति करता था कि वह स्वयं उसके लिए पर्याप्त होना चाहिए।

इन पर्वों में से एक में, हन्ना दुःख से इतनी अभिभूत थी कि वह उठी और यहोवा से प्रार्थना करने लगी। उसने परमेश्वर से प्रतिज्ञा की, कि यदि वह उसे एक पुत्र देगा, तो वह यहोवा की सेवा के लिए, उसे उसके जीवन भर के लिये अर्पण कर देगी। 1:11 में उसने कहा, “उसके सिर पर छुरा फिरने न पाएगा,” अर्थात यह कि गिनती 6:1-21 से वह यहोवा की सेवा के लिए विशेष समर्पण वाली नाज़ीरों की प्रतिज्ञा का पालन करेगी। जब वह प्रार्थना करती है तो एली याजक ने हन्ना के बड़े दुःख को देखा और सोचा कि वह नशे में है। लेकिन हन्ना ने अपनी निर्दोषता का वचन दिया। और उसकी कहानी को सुनने के बाद, एली ने उसे आश्वासन दिया कि परमेश्वर उसे एक पुत्र देने के साथ सम्मानित करेगा।

इस प्रकरण के कुछ समय बाद, हन्ना ने गर्भ धारण किया और एक पुत्र को जन्म दिया। उसने उसका नाम शमूएल रखा, इब्रानी में *शेमूएल* (*שְׁמוּאֵל*), इस नाम का अर्थ सम्भवतः “नाम एल है,” जो यह दर्शाता है कि उसने उसके लिए परमेश्वर के नाम को पुकारा गया था। जब शमूएल का दूध छूट गया, तो हन्ना ने अपने प्रतिज्ञा को पूरा किया और उसे मिलाप वाले तम्बू पर एली के व्यक्तिगत सेवक के रूप में यहोवा की सेवा के लिए अर्पण कर दिया।

अपने स्वरूप में, शमूएल के शुरूआती वर्षों की कहानी एक नम्र लेविय महिला की कहानी है जिसने प्रार्थना का चमत्कारी उत्तर पाया और परमेश्वर के प्रति समर्पण के साथ प्रत्युत्तर दिया। लेकिन हन्ना के अनुभव का महत्व इतना अधिक था, कि वह उसके व्यक्तिगत जीवन से भी दूर तक गया। हमारे लेखक ने शमूएल के जन्म और समर्पण की कहानी के भीतर, परमेश्वर के लिए हन्ना के स्तुति-गीत के विवरण को रखने के द्वारा इस बड़े महत्व को उजागर किया।

**हन्ना का स्तुति-गीत (1 शमूएल 2:1-10)।** हन्ना का स्तुति-गीत इस बात पर विशेष ध्यान देता है कि कैसे परमेश्वर की वाचा के अभिशापों एवं आशीषों ने दुष्टों एवं विनम्र लोगों की स्थितियों को उलट

दिया। विशेष रूप से, जो कुछ परमेश्वर ने हन्ना के पुत्र के जन्म एवं समर्पण के माध्यम से किया था उसके लिए हन्ना ने उसकी प्रशंसा की। परमेश्वर द्वारा सत्ता को उलटना हमारी पुस्तक में इतनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है कि वास्तव में हन्ना का गीत शमूएल की पूरी पुस्तक के लिए विषयवस्तुओं की एक मोटी तालिका प्रदान करता है।

> हन्ना का गीत जिसे हम 1 शमूएल के अध्याय 2 में पाते हैं, वास्तव में महत्वपूर्ण इस मायने में है, कि यह उस बात के लिए मंच सजाती है जो बाकी पुस्तक में घटित होता है। शमूएल की पुस्तकों के कई प्रमुख विषय यहाँ पाए जाते हैं। नए नियम में मरियम के गीत के साथ उसके गीत की तुलना करना भी दिलचस्प है, जहाँ दोनों ही मामलों में इस बात को कहा जा रहा है कि सिर्फ एक ही परमेश्वर है; यहोवा एक ही है। और फिर, सिर्फ वही अकेला है जो उद्धार कर सकता है। हन्ना के गीत में दिखाई देने वाला दूसरा विषय असंभाव्यों का उपयोग, कंगालों का उपयोग, दरिद्रों, आशाहीनों का उपयोग कर रहे परमेश्वर का विचार है। और निश्चित रूप से, यह ऐसा विषय है जो पूरी बाइबल में पाया जाता है। परमेश्वर की शक्ति हमारी कमजोरी में प्रदर्शित होती है। और इसलिए, वास्तव में, जब वह राष्ट्र के उद्धार के लिए उसका उपयोग करने के लिए परमेश्वर की प्रशंसा कर रही है, तो हम इस विचार को पूरी पुस्तक में प्रवाहित होता देखते हैं।
>
> — डॉ. जॉन ओसवॉल्ट

2:1-10 में हम हन्ना के स्तुति-गीत के अभिलेख को तीन भागों में बाँट सकते हैं। बहुत कुछ जैसा कि हम शमूएल के शुरूआती अध्यायों में देखते हैं, हन्ना का गीत उस बात से शुरू होता है, जो परमेश्वर ने उसके व्यक्तिगत अनुभव में किया था। जैसे कि उसने पद 1 में कहा, "मेरा मन यहोवा के कारण मगन है; ... मेरा मुँह मेरे शत्रुओं के विरुद्ध खुल गया।" हन्ना ने स्वयं अपनी आँखों से देखा था कि कैसे परमेश्वर ने उसकी परिस्थितियों को उलट दिया था। उसने शीलो में पनिन्ना की पाखण्डी आराधना के कारण उसे लज्जा के साथ शापित किया था। और उसने हन्ना को उसकी निष्ठावान आराधना के कारण बच्चे की खुशी के साथ आशीषित किया था।

इसके बाद, और हमारी पुस्तक के अगले कई अध्यायों के समान, हन्ना का गीत उसके व्यक्तिगत अनुभव के परे सामान्य रूप से इस्राएल देश के लिए जाता है। पद 2-8 में, हन्ना ने विश्वास व्यक्त किया कि जब परमेश्वर बड़े पैमाने पर अभिशापों एवं आशीषों को उँडेलता है, तो वह कई लोगों की परिस्थितियों को उलट देगा। 1 शमूएल 2:7-8 में हन्ना के वचनों को सुनें:

> यहोवा निर्धन करता है और धनी भी बनाता है, वही नीचा करता और ऊँचा भी करता है। वह कंगाल को धूलि में से उठाता; और दरिद्र को घूरे में से निकाल खड़ा करता है, ताकि उनको अधिपतियों के संग बिठाए, और महिमायुक्त सिंहासन के अधिकारी
> बनाए (1 शमूएल 2:7-8)।

परमेश्वर द्वारा उलटने के दिव्य-विधान के इस व्यापक प्रारूप ने इस्राएल के नेतृत्व में आने वाले बदलावों की आशा व्यक्त की। जैसा कि हम इस अध्याय में देखेंगे, परमेश्वर ने एली के परिवार को शापित और शमूएल को आशीषित किया। और बाद में, परमेश्वर ने शाऊल और उसके घराने को शापित और दाऊद एवं उसके राजवंश को आशीषित किया।

अंत में, बहुत कुछ जैसे हमारी पुस्तक का अंतिम प्रमुख विभाजन दाऊद की स्थायी राजशाही पर ध्यान केंद्रित करता है, वैसे ही हन्ना की प्रशंसा का समापन परमेश्वर के महिमामय राज्य एवं राजा के लिए भविष्य की ओर देखता है। पद 9-10 में, हन्ना ने अपनी निश्चितता को प्रकट किया कि अभिशापों एवं आशीषों का परमेश्वर द्वारा उलटना इस्राएल में एक दिन ऐसे राजा को जन्म देगा, जो परमेश्वर के सभी शत्रुओं पर विजय पाएगा। जिस तरह उसने इसे पद 10 में बताया उसे सुनिए:

> जो यहोवा से झगड़ते हैं वे चकनाचूर होंगे; वह उनके विरुद्ध आकाश में गरजेगा। यहोवा पृथ्वी की छोर तक न्याय करेगा; और अपने राजा को बल देगा, और अपने अभिषिक्त के सींग को ऊँचा करेगा (शमूएल 2:10)।

हन्ना के समय में, दशकों से इस्राएल को अपने शत्रुओं के हाथों हार का सामना करना पड़ा था। लेकिन यहाँ, हन्ना ने साहसपूर्वक घोषणा की कि "जो यहोवा से झगड़ते हैं" उन पर परमेश्वर के अभिशाप आएंगे। वे "चकनाचूर होंगे," और "यहोवा पृथ्वी की छोर तक न्याय करेगा।" हन्ना को विश्वास हो गया था कि परमेश्वर इतिहास को उस दिन की ओर बढ़ा रहा है जब वह पूरे संसार भर में अपने सभी विरोधियों को हमेशा के लिए अभिशाप देगा।

लेकिन ध्यान दें कि हन्ना के अंतिम वचन उजागर करते हैं कि परमेश्वर का न्याय इस्राएल के राजा के ऊपर उसकी आशीषों के माध्यम से आएगा। जैसा कि उसने इसे पद 10 के अंत में कहा, "यहोवा ... अपने राजा को बल देगा, और अपने अभिषिक्त के सींग को ऊँचा करेगा।" हन्ना ने पुष्टि की कि परमेश्वर इस्राएल के भावी राजा को बल एवं विजय की आशीष देने के द्वारा पृथ्वी की छोर तक न्याय करेगा।

दुर्भाग्य से, कई व्याख्याकार हन्ना के समापन वचनों के महत्व को कम करके आँकते हैं। शमूएल की पुस्तक से परिचित हर कोई जानता है कि, बाद में, 1 शमूएल 8 में, इस्राएल ने परमेश्वर से उनके ऊपर राज करने के लिए एक राजा की माँग की। और पद 7 में, परमेश्वर ने शमूएल को यह बताने के द्वारा उत्तर दिया, "उन्होंने तुझ को नहीं परन्तु मुझी को निकम्मा जाना है कि मैं उनका राजा न रहूँ।" अक्सर कई बार, इन वचनों का अर्थ यह निकाला जाता है कि परमेश्वर किसी भी परिस्थिति में कभी नहीं चाहता था कि इस्राएल का कोई मानवीय राजा हो। लेकिन ऐसी बात बिल्कुल भी नहीं थी। मानवीय राजा के लिए इस्राएल की इच्छा समस्या नहीं थी। इसके विपरीत, पद 20 हमें बताता है कि इस्राएल को इस समय पर राजा सिर्फ इसलिए चाहिए था ताकि वे अपने आसपास के "और सब [मूर्तिपूजक] जातियों के समान हो जाएँ।" परमेश्वर के समय की प्रतीक्षा के प्रति उनकी भक्तिहीनता और इनकार ने परमेश्वर की प्रतिक्रिया को प्रेरित किया, न कि एक राजा के लिए उनके निवेदन ने। वास्तव में, भविष्य के राजा के लिए हन्ना के उत्साह ने — वह जो इस्राएल के राज्य के लिए परमेश्वर के उद्देश्यों की सेवा करेगा — यथार्थ में परमेश्वर से उसके लोगों के लिए पहले के प्रकाशनो की सुसंगत शिक्षाओं को प्रतिबिंबित किया।

सिर्फ कुछ उदाहरणों का उल्लेख करने के लिए, उत्पत्ति 17:6 में, परमेश्वर ने अब्राहम को इस प्रतिज्ञा के साथ आशीषित किया कि "तेरे वंश में राजा उत्पन्न होंगे।" और उत्पत्ति 35:11 में, परमेश्वर ने याकूब से प्रतिज्ञा की कि "तेरे वंश में राजा उत्पन्न होंगे।" इससे भी अधिक, उत्पत्ति 49:10 में, याकूब ने भविष्यवाणी की कि "न तो यहूदा से राजदण्ड छूटेगा।" हमें यह जोड़ना चाहिए कि व्यवस्थाविवरण 17:14-20 में, परमेश्वर ने राजशाही के लिए नियमों को देने के द्वारा इस्राएल में राजाओं की स्थापना की प्रत्याशा की। इसके अतिरिक्त, न्यायियों 21:25, और कई अन्य अनुच्छेद, ध्यान देते हैं कि न्यायियों के समय में परेशानियाँ इसलिए पैदा हुई क्योंकि "इस्राएलियों का कोई राजा न था।" और शमूएल की पुस्तक में सिर्फ हन्ना ही इस्राएल के राजा में अपनी आशा की पुष्टि करने वाली अकेली नहीं थी। 1 शमूएल 2:35 में, इस्राएल में एक भविष्यवक्ता ने एली से घोषणा की कि परमेश्वर एक याजक खड़ा करेगा जो "[परमेश्वर के] अभिषिक्त [राजा] के आगे आगे सब दिन चला फिरा करेगा।"

इन अनच्छेदों के प्रकाश में, हम देख सकते हैं कि शमूएल के चमत्कारी जन्म ने इस्राएल के विश्वास के एक प्राचीन सिद्धांत में हन्ना के भरोसे को नवीनीकृत किया। वह जानती थी कि, एक दिन, परमेश्वर इस्राएल के एक महान राजा के माध्यम से पूरे संसार के लिए अपने राज्य का विस्तार करेगा। और शमूएल के जन्म के साथ, हन्ना आश्वस्त हो गई कि परमेश्वर इस्राएल को उस दिन के करीब ले जा रहा था।

शमूएल के शुरूआती वर्षों की संरचना एवं विषयवस्तु को देखने के बाद, आइए, राजशाही के लिए शमूएल की प्रस्तावना के दूसरे भाग को देखें: 2:12–7:17 में इस्राएल के लेवीय नेतृत्व में बदलाव।

## नेतृत्व में बदलाव (1 शमूएल 2:12–7:17)।

जब हन्ना ने शीलोह में परमेश्वर की आराधना के लिए शमूएल को अर्पण किया, तब एली और उसके पुत्र, इस्राएल के सबसे शक्तिशाली लेवीय अधिकारी थे। लेकिन इन वर्षों के दौरान, कुछ बहुत ही अप्रत्याशित बात हुई। विनम्र शमूएल ने एली और उसके पुत्रों का स्थान लिया। यह बदलाव इस्राएल में राजशाही की स्थापना के लिए महत्वपूर्ण था। यह वास्तव में इतना महत्वपूर्ण था, कि हमारे लेखक को ने यह समझाने की आवश्यकता को महसूस किया कि स्वयं परमेश्वर मूसा के साथ अपनी वाचा के अभिशापों एवं आशीषों को लागू करने के द्वारा इन घटनाओं को लाया था। एली और उसके पुत्र परमेश्वर के अभिशापों के तहत आ गए, क्योंकि उन्होंने आराधना के लिए मूसा की व्यवस्था का घोर उल्लंघन किया। और शमूएल ने परमेश्वर की आशीषों को प्राप्त किया क्योंकि, उसने मूसा की व्यवस्था में आराधना के लिए निर्देशों को पूरी ईमानदारी के साथ माना।

शमूएल के लेखक ने नेतृत्व में इस बदलाव को एली के परिवार और शमूएल के बीच चार विरोधाभासों की एक श्रृंखला के साथ समझाया। सबसे पहले, 1 शमूएल 2:12-21 में उसने एली के पुत्रों की आराधना और शमूएल की आराधना के दिव्य मूल्यांकन की तुलना की। दूसरा, 1 शमूएल 2:22-26 में, उसने एली के परिवार एवं शमूएल के लिए दोनों दिव्य एवं सार्वजनिक मूल्यांकनों की तुलना की। तीसरा, उसने 2:27– 4:1क में एली के लिए परमेश्वर की प्रतिक्रिया के साथ शमूएल के लिए उसकी प्रतिक्रिया की तुलना की। और चौथा, 4:1ख–7:17 की शुरूआत के साथ, पलिश्तियों के साथ इस्राएल के संघर्षों के संबंध में हम एली के परिवार और शमूएल के बीच तुलना को देखते हैं।

दिव्य मूल्यांकन (1 शमूएल 2:12-21)। दिव्य मूल्यांकनों की तुलना सबसे पहले पद 12-17 में एली के पुत्रों से होती है और एक अचानक, निर्णयात्मक निंदा के साथ शुरू होती है। जैसा कि हम पद 12 में पढ़ते हैं, “एली के पुत्र तो लुच्चे थे। उन्होंने यहोवा को न पहिचाना।” हमारे लेखक ने फिर स्पष्ट किया कि वह इस दृष्टिकोण पर क्यों पहुँचा। मूसा की व्यवस्था द्वारा स्थापित तरीके से बलिदान के मांस से अपने हिस्से को लेने के बजाए, एली के पुत्रो ने समय से पहले अपने लिए सबसे अच्छे मांस को चुना। यदि कोई आपत्ति व्यक्त करता, तो उन्होंने बलपूर्वक सबसे अच्छे हिस्से को छीन लेने की धमकी दी। शमूएल के लेखक ने फिर इन आराधना के उल्लंघनों के लिए परमेश्वर के मूल्यांकन को प्रकट किया। पद 17 में उसने लिखा, “इसलिये उन जवानों का पाप यहोवा की दृष्टि में बहुत भारी हुआ; क्योंकि वे मनुष्य यहोवा की भेंट का तिरस्कार करते थे।”

लेकिन इस वर्णन के तुरंत बाद, हमारे लेखक ने 2:18-21 में परमेश्वर द्वारा शमूएल के असाधारण अलग मूल्याकंन की ओर रूख किया। उसने पहले बताया कि शमूएल के लिए छोटा सा बागा, एक साधारण पहिनने वाला कपड़ा बनाकर प्रति वर्ष लौटने के द्वारा हन्ना ने परमेश्वर के प्रति अपने भक्ति दिखाई। और परमेश्वर ने हन्ना को तीन और पुत्र और दो बेटियाँ देकर आशीष देना जारी रखा। फिर 2:21 इन वचनों के साथ समाप्त होता है:

> और बालक शमूएल यहोवा के संग रहता हुआ बढ़ता गया (1 शमूएल 2:21)।



चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट http://thirdmill.org/ पर जाएं।

शमूएल के लिए परमेश्वर की जारी रहने वाली स्वीकृति एली के पुत्रों के लिए उसकी गंभीर निंदा के ठीक विपरीत थी।

**दिव्य एवं सार्वजनिक मूल्यांकन (1 शमूएल 2:22-26)।** फिर, 1 शमूएल 2:22-26 में, हमारे लेखक ने एली के परिवार और शमूएल के लिए दिव्य एवं सार्वजनिक दोनों मूल्यांकनों की तुलना की। एक ओर, पद 22-25 में, हम पढ़ते हैं कि एली के पुत्र कनानी प्रजनन अनुष्ठानों से प्रभावित होकर, मिलाप वाले तम्बू के द्वार पर सेवा करने वाली महिलाओं के साथ यौन संबंध बनाते थे। और पद 24 ध्यान देता है कि विश्वासयोग्य इस्राएली, जिन्हें एली ने "यहोवा की प्रजा" कहा, वे उसके पुत्रों के बारे में शिकायत कर रहे थे। एली ने अपने पुत्रों को कड़ी चेतावनी दी कि यदि वे ऐसा करना जारी रखते हैं, तो कोई भी उनकी मदद नहीं कर सकता है। लेकिन उन्होंने अपने पिता की ताड़ना को नजरअंदाज कर दिया। और पद 25 हमें बताता है क्यों: "[एली के पुत्रों] ने अपने पिता की बात न मानी; क्योंकि यहोवा की इच्छा उन्हें मार डालने की थी।"

एली के पुत्रों के इन नकारात्मक दिव्य एवं सार्वजनिक आंकलन को बताने के बाद, हम शमूएल की इनसे अलग सेवा के एक संक्षिप्त लेख को पाते हैं। पद 21 से हमारे लेखक ने यह ध्यान देने के द्वारा शमूएल पर अपनी पहले वाली सकारात्मक टिप्पणी का विस्तार किया कि कैसे परमेश्वर एवं इस्राएल के लोगों दोनों ने शमूएल के प्रति प्रतिक्रिया व्यक्त की। 1 शमूएल 2:26 में हम इसे पढ़ते हैं:

> परन्तु शमूएल बालक बढ़ता गया और यहोवा और मनुष्य दोनों उससे प्रसन्न रहते थे (1 शमूएल 2:26)।

जैसा कि यह पद हमें बताता है, परमेश्वर और इस्राएल के विश्वासयोग्य लोगों दोनों ने शमूएल की लेवीय सेवा का अनुमोदन किया।

**परमेश्वर की प्रतिक्रिया (1 शमूएल 2:27–4:1क)।** इन अलग-अलग मूल्यांकनों के बाद, 2:27–4:1क में हमारे लेखक ने एली और उसके परिवार की बेईमान सेवा के लिए परमेश्वर की प्रतिक्रियाओं के साथ शमूएल की विश्वासयोग्य सेवा के लिए उसकी प्रतिक्रिया की तुलना की।

एक ओर, हमारे लेखक ने 2:27-36 में एली के बारे में बताया। उसने बताया कि परमेश्वर ने एक बेनाम भविष्यद्वक्ता को भेजा, परमेश्वर का जन, जिसने बताया कि कैसे एली और उसके पुत्रों ने इस्राएल की आराधना को भ्रष्ट कर दिया था। इस भविष्यद्वक्ता के माध्यम से, परमेश्वर ने एली के परिवार के खिलाफ पद 31 में यह कहते हुए अभिशापों की धमकी दी, "मैं तेरा भुजबल और तेरे मूलपुरुष के घराने का भुजबल ऐसा तोड़ डालूँगा।" परमेश्वर ने एली के परिवार को अस्वीकार कर दिया था और उन्हें अपनी सेवा से हटा रहा था।

दूसरी ओर, हमारे लेखक ने 3:1–4:1क में शमूएल के लिए परमेश्वर की तुलनात्मक प्रतिक्रिया की सूचना दी। उसने इस बात को दर्शाने के लिए कि यह कितना उल्लेखनीय था कि परमेश्वर सीधे शमूएल से बात करने वाला था, सबसे पहले यह ध्यान दिया कि इस समय पर यहोवा ने शायद ही कभी अपने भविष्यद्वक्ताओं के माध्यम से बात की। फिर, शमूएल को रात में कई बार जगाने के बाद, परमेश्वर ने पद 11 में उजागर किया कि वह कुछ दिल दहला देने वाला काम करने वाला था कि "जिससे सब सुननेवालों के कान सनसनाएँगे।" उसने शमूएल से कहा कि अब वह एली के परिवार के पापों को और अधिक सहन नहीं करेगा, बल्कि उन्हें उनकी दुष्टता के लिए हमेशा दंडित करेगा। सुबह, शमूएल ने एली को उसके परिवार के खिलाफ अभिशापों के खतरे के बारे में बताया। विडंबना यह है, कि स्वयं एली ने स्वीकार किया कि परमेश्वर न्यायी है और वह वही करेगा जो सही था। हमारा लेखक ने फिर इस तुलना को 1 शमूएल 3:19-20 में, इन वचनों के साथ बंद किया:



चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट http://thirdmill.org/ पर जाएं।

> शमूएल बड़ा होता गया, और यहोवा उसके संग रहा, और उसने उसकी कोई भी बात निष्फल होने नहीं दी। और दान से बेर्शेबा तक के रहनेवाले सारे इस्राएलियों ने जान लिया कि शमूएल यहोवा का नबी होने के लिये नियुक्त किया गया है (1 शमूएल 3:19-20)।

यहाँ ध्यान दें कि हमारे लेखक ने 2:21, 26 से शमूएल के लिए अपने अनुमोदन पर विस्तार किया। जैसे-जैसे शमूएल और अधिक बड़ा हुआ, "यहोवा उसके संग रहा।" और क्योंकि शमूएल ने मिलाप वाले तम्बू में परमेश्वर की सेवा ईमानदारी से की, इसलिए परमेश्वर ने उसे आशीषित किया और सारे इस्राएल की आँखों में अपने भविष्यद्वक्ता के रूप में खड़ा किया।

**पलिश्तियों से संघर्ष (1 शमूएल 4:1ख–7:17).** एली के परिवार एवं शमूएल के बीच भिन्नताएं एक लंबी कहानी में समाप्त होते हैं जो उन लड़ाईयों से संबंधित है जिन्हें इस्राएल ने 4:1ख–7:17 में पलिश्तियों से लड़ी थीं। यह अंतिम भाग तीन प्रकरणों में विभाजित होता है जो इस बात पर ध्यान आकर्षित करते हैं कि कैसे एली के परिवार के ऊपर परमेश्वर के अभिशाप पलिश्तियों के सामने इस्राएल के हार कारण बने। और इसके विपरीत, शमूएल पर परमेश्वर की आशीषों से पलिश्तियों के ऊपर इस्राएल की जीत हुई।

इस कहानी का पहला प्रकरण 4:1ख-22 में शुरू होता है। यहाँ हम पाते हैं कि एली के परिवार के पाप, पलिश्तियों के साथ लड़ाई में इस्राएल की हार का कारण बने। एली के पुत्रों ने लड़ाई में परमेश्वर के संदूक को ले जाकर धार्मिकता का झूठा दिखावा किया, बल्कि उन्होंने वाचा के संदूक को जीत के लिए एक तावीज़ के रूप में माना। इसके अतिरिक्त, इन वर्षों के दौरान उनके पाप इतने अधिक बढ़ गए थे कि न सिर्फ पलिश्तियों ने इस्राएल को खदेड़ दिया, बल्कि वाचा के सन्दूक को भी अपने कब्जे में ले लिया। एली के दोनों पुत्र लड़ाई में मारे गए, और स्वयं एली उनकी मृत्यु और वाचा के सन्दूक के छीन लिए जाने का समाचार सुनकर मर गया। लेकिन इससे भी बड़ी बात, कि एली के परिवार के पाप पूरे इस्राएल देश पर परमेश्वर के अभिशाप को ले आए। 4:21 में, एली की विधवा बहू ने अपने नवजात बेटे का नाम इब्रानी में "ईकाबोद," (*אִי־כָבוֹד*) रखा, अर्थात "महिमा उठ गई," या "महिमा कहाँ रही?" जैसा कि वह पद 22 में समझाती है, "इस्राएल में से महिमा उठ गई है, क्योंकि परमेश्वर का सन्दूक छीन लिया गया है।" एली और उसके पुत्रों के पाप देश पर इस भयानक अभिशाप को लाए।

इस प्रकरण के बाद, 5:1–7:2 में हम परमेश्वर के हस्तक्षेप को पढ़ते हैं। पलिश्तियों ने अशदोद में अपने झूठे देवता दागोन के मंदिर में उसकी मूर्ति के सामने परमेश्वर के सन्दूक को रखने के द्वारा इस्राएल पर अपनी जीत का जश्न मनाया। लेकिन परमेश्वर ने अलौकिक रूप से हस्तक्षेप किया। पहली रात के बाद, पलिश्तियों ने यहोवा के सन्दूक के सामने भूमि पर, दागोन की मूर्ति को मुंह के बल गिरा हुआ पाया। दूसरी रात के बाद, पलिश्तियों ने दागोन को मुंह के बल पड़ा हुआ फिर पाया। लेकिन इस बार, जैसा कि प्राचीन मानवीय सेनाएं अपने हारे हुए शत्रुओं के सिर और हाथ अलग कर देते थे, वैसे ही दागोन का सिर और हाथ कटे हुए थे। यहोवा ने अशदोद के लोगों को गिलटियों से और संभवतः चूहों द्वारा फैलाए जाने वाली बुबोनिक महामारी से पीड़ित किया। जब पलिश्तियों ने परमेश्वर के सन्दूक को गत और एक्रोन के नगरों में स्थानांतरित किया तो उसने तब भी ऐसा ही किया। सात महीने बाद, पलिश्तियों ने अपने पुजारियों और ज्योतिषियों से सलाह ली। उन्होंने गायों द्वारा खींची जाने वाली गाड़ी पर सन्दूक को वापस भेजने की उन्हें सलाह दी — उनके प्रजनन धर्म का प्रतीक। और दोषबलि के रूप में, उन्होंने पलिश्तियों के पाँच नगरों की ओर से पाँच सुनहरी गिलटियाँ और पाँच सुनहरे चूहे भेजने की सिफारिश की।

> जब पलिश्तियों ने सन्दूक को बाहर निकलते देखा, तो वे वास्तव में डर गए। वे कहते हैं, "यही उस यहोवा का सन्दूक है जो मिस्रियों के खिलाफ उन सभी महामारियों को लाया था और जिसने उन्हें मिस्र से छुड़ाया था।" और, वास्तव में, पलिश्ती लोग एकमद सही हैं। लेकिन पलिश्ती लोगों ने कहा, "ठीक है, फिर भी,



चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट http://thirdmill.org/ पर जाएं।

> आओं हम चलें और उनसे लड़ने की कोशिश करें।" इस तरह पलिश्ती लोगों का डरना ठीक था कि यह परमेश्वर का सन्दूक था जो महान निर्गमन को लाया था। लेकिन पाठकों के रूप में जो हम जानते हैं, वह है कि निर्गमन लाने वाला परमेश्वर अपने लोगों से खुश नहीं है। इस तरह, पलिश्ती लोग इस्राएलियों को हराने एवं वाचा के सन्दूक को छीनने में सफल रहे ... शायद वाचा का सन्दूक इस महान परमेश्वर से नहीं जुड़ा है जो निर्गमन को ला सकता है।" लेकिन, वास्तव में, हम इसका उलट देखते हैं। हाँ, परमेश्वर ने वाचा के सन्दूक को छीन लिए जाने की अनुमित दी है। लेकिन, जैसे ही यह सन्दूक पलिश्तियों के इलाके में पहुँचता है, अनुमान लगाइए क्या होता है? पलिश्ती लोग उन महामारियों का सामना करने लगे जिनका अनुभव मिस्रियों ने किया था। इस तरह, फिर हम जो पाते हैं वह यह है कि, पलिश्तियों द्वारा वाचा के सन्दूक पर इस तरह कब्जा करना उस बात की याद दिलाता है जिसमें परमेश्वर ने निर्गमन की पुस्तक में कार्य किया था।
>
> — एन्ड्रू एबरनथी, **Ph.D.**

गाय सन्दूक को इस्राएल के लिए एक लेवीय नगर, बेतशेमेश में ले आए। लेकिन दुःख की बात है कि बेतशेमेश में लेवियों ने भी आराधना के लिए परमेश्वर के नियमों का उल्लंघन किया। मूसा की व्यवस्था के विपरीत, उन्होंने पलिश्ती सुनहरी गिलटियाँ और चूहो को सन्दूक के सामने रख दिया। और भक्तिपूर्णता से सन्दूक को ढँकने के बजाय, उन्होंने उसे, या शायद उसके अन्दर देखा। परिणामस्वरूप, परमेश्वर ने बेतशेमेश में 70 लोगों को मार डाला, और लोगों ने विलाप किया। तब इस्राएली सन्दूक को सुरक्षित रखने के लिए किर्यत्यारीम ले गए। भले ही वाचा का सन्दूक वापस आ गया था, 7:2 इस तथ्य पर जोर देता है कि इस समय पर इस्राएल का पूरा देश परमेश्वर के अभिशापों के तहत पीड़ित रहा। हम पढ़ते हैं:

> बहुत दिन हुए, अर्थात् बीस वर्ष बीत गए, और इस्राएल का सारा घराना विलाप करता हुआ यहोवा के पीछे चलने लगा (1 शमूएल 7:2)।

अगले प्रकरण में, हम 7:3-17 में पलिश्तियों पर इस्राएल की जीत के बारे में पढ़ते हैं। जैसे कि हमें आशा करनी चाहिए, हमारे लेखक ने इस जीत के लिए शमूएल की विश्वासयोग्य सेवा को कारण के रूप चिन्हांकित किया। शमूएल ने सबसे पहले इस्राएलियों से पहले उनके पराये देवताओं को दूर करके यहोवा के पास लौटने की याचना की। उसने घोषणा की कि यदि वे अपने हृदयों को यहोवा की ओर मोड़ते हैं और सिर्फ उसकी उपासना करते हैं, तो परमेश्वर उन्हें पलिश्तियों से छुड़ाएगा। इस्राएलियों ने परमेश्वर के सामने स्वयं को दीन किया और आराधना के लिए मूसा कि नियमों के अपने उल्लंघन से पश्चाताप किया। इसलिए, शमूएल ने उनकी ओर से यहोवा से प्रार्थना की। जब पलिश्ती युद्ध के लिए एकत्रित हुए, तो लोगों ने शमूएल को पुकारा। शमूएल ने मूसा की व्यवस्था के अनुसार बलिदान चढ़ाए, और परमेश्वर ने इस्राएल देश को पलिश्तियों पर विजय दिलाई। 7:13 में हम पढ़ते हैं, "शमूएल के जीवन भर यहोवा का हाथ पलिश्तियों के विरुद्ध बना रहा।" और जब शमूएल अपने गृह नगर रामा लौटा, और उसने यहोवा के लिए एक वेदी बनाई तो शमूएल की विश्वासयोग्य सेवा इस्राएल के लिए आशीषों को लगातार लाती रही।

लेवीय नेतृत्व में इस्राएल के बदलाव के इस अंतिम भाग ने एली के परिवार से शमूएल के लिए लेवीय अधिकार के बदलाव के बारे में हर एक प्रश्न को तय कर दिया। परमेश्वर की आराधना हेतु उनकी अवमानना के लिए एली के परिवार पर परमेश्वर के अभिशापों ने इस्राएल के संपूर्ण देश को हार की तरफ ढकेल दिया था। लेकिन परमेश्वर के सामने आराधना में शमूएल की विश्वासयोग्य सेवा के लिए उस पर परमेश्वर की आशीषों ने इस्राएल को जीत दिलाई। परमेश्वर ने स्वयं शमूएल को खड़ा किया था, जिसने इस्राएल के लिए और, विशेष रूप से, राजा के रूप में दाऊद के लिए राजशाही को प्रस्तुत किया।

राजशाही के लिए शमूएल की प्रस्तावना की संरचना एवं विषयवस्तु को देख लेने के बाद, हमें अपनी पुस्तक के इस भाग के मसीही अनुप्रयोग की ओर मुड़ना चाहिए। इन अध्यायों को मसीह के अनुयायियों के जीवनों को कैसे प्रभावित करना चाहिए?

## मसीही अनुप्रयोग

अक्सर कई बार, समझदार मसीही लोग शमूएल की पुस्तक के इस भाग को सिर्फ लापरवाही से पढ़ते हैं जब तक कि वे किसी ईश्वरीय-ज्ञान या नैतिक सिद्धांत पर न आ जाएं जो उनके व्यक्तिगत मसीही अनुभवों के साथ आसानी से फिट बैठता है। अब, हमारी पुस्तक का पहली भाग कई विषयों का उल्लेख करता है। इसलिए, इन अध्यायों को इस रीति से पढ़ने में स्वाभाविक रूप से कोई गलत बात नहीं है। लेकिन यह सुनिश्चित करने के लिए कि हम इन अध्यायों का दुरुपयोग नहीं करते हैं, इसी समय पर हमें अपने मसीही अनुप्रयोगो को उन विषयों के साथ संरेखित करने की आवश्यकता है, जिन पर शमूएल के लेखक ने जोर दिया था।

साधारण शब्दों में कहे तो, राजशाही के लिए शमूएल की प्रस्तावना के मसीही अनुप्रयोगों को हमारे लेखक द्वारा परमेश्वर की वाचाओं एवं परमेश्वर के राज्य पर जोर दिए जाने के साथ संरेखित होना चाहिए। ये दोनों विषय हमारे जीवनों के लिए इन अध्यायों की प्रासंगिकता की ओर महत्वपूर्ण अभिविन्यासों को प्रदान करते हैं। आइए सबसे पहले इस बात को देखें कि परमेश्वर की वाचाओं पर हमारे लेखक द्वारा जोर दिए जाने पर यह कैसे सच है।

### परमेश्वर की वाचाएँ

जैसा कि हमने अपने पिछले अध्याय में उल्लेख किया था, शमूएल के लेखक को छह प्रमुख दिव्य वाचाओं के बारे में जानकारी थी। आदम और नूह में सब लोगों के साथ परमेश्वर की वाचाएँ; अब्राहम, मूसा और दाऊद में इस्राएल देश के साथ वाचाएँ; और वह नई वाचा, जिसकी भविष्यवाणी यिर्मयाह एवं अन्य भविष्यद्वक्ताओं ने की थी, जिसे परमेश्वर इस्राएल और यहूदा के साथ तब बाँधेगा जब वे बंधुआई से लौटेंगे।

अब, इस अध्याय में, हमने देखा कि राजशाही के लिए शमूएल की प्रस्तावना की घटनाएं उस समय घटित हुई, जब मूसा के साथ परमेश्वर की वाचा पूरी तरह से कार्यान्वित थी। लेकिन हमें ध्यान में रखना चाहिए कि जब शमूएल की पुस्तक को लिखा गया था, परमेश्वर ने अपनी वाचा दाऊद के साथ भी बाँधी थी। इस कारण से, हमारे लेखक ने जो कुछ इन अध्यायों में लिखा उसे दाऊद और उसके घराने के प्रकाश में लागू करने के लिए उसने अपने मूल श्रोताओं से आशा की थी।

लेकिन जब मसीह के अनुयायी राजशाही के लिए शमूएल की प्रस्तावना को लागू करते हैं, तो हमें एक कदम आगे जाना चाहिए। हम उस समय के बाद रहते हैं, जब परमेश्वर ने मसीह में नई वाचा को स्थापित किया है। और यह नई वाचा मूसा और दाऊद के साथ बाँधी गई परमेश्वर की पहले वाली वाचाओं की गतिशीलताओं को फिर से संगठित करती है। यह पुनःसंगठन इतना महत्वपूर्ण है कि हमें एक विश्वासयोग्य मार्गदर्शक की आवश्यकता है। राजशाही के लिए शमूएल की प्रस्तावना में बताई गई प्रत्येक दिव्य परोपकारिता, मानवीय निष्ठा की प्रत्येक शर्त, और प्रत्येक अभिशाप एवं आशीष को लागू करने के लिए, हमें नए नियम में दिए गए पवित्र आत्मा के अचूक प्रकाशन की आवश्यकता है।

पहले स्थान पर, नया नियम हमें सिखाता है कि शमूएल के पहले भाग में प्रत्येक दिव्य परोपकारिता का स्थान, मसीह में परमेश्वर की परोपकारिता द्वारा ले लिया गया है। न्यायियों के समय के दौरान इस्राएल को उनके कष्टों से मुक्ति दिलाने के लिए परमेश्वर ने दयालुता में शमूएल को खड़ा किया। लेकिन परमेश्वर ने इससे भी बड़ी परोपकारिता तब दिखाई, जब उसने मसीह को भेजा। अपने जीवन, मृत्यु

और पुनरुत्थान में, मसीह ने परमेश्वर के लोगों को सदियों के कष्टों से छुड़ाया। और मसीह अपने लोगों को, यहाँ तक कि युग के अंत तक छुटकारा देना जारी रखेगा। इसके अलावा, शमूएल के दिनों में परमेश्वर का दयावान हस्तक्षेप विभिन्न विशिष्ट कृपाओं में प्रत्येक इस्राएली के जीवनों में प्रवाहित हुआ। और, मसीह के अनुयायियों के रूप में, जब हम शमूएल के दिनों में परमेश्वर की परोपकारिता का पता लगाते हैं, तो हम उन कई तरीकों को देख सकते हैं जिनमें परमेश्वर प्रत्येक दिन हमारे प्रति दयालु है।

दूसरे स्थान पर, राजशाही के लिए शमूएल की प्रस्तावना में मानवीय निष्ठा की परमेश्वर की शर्त नई वाचा वाले युग के लिए लागू होती है। हमें सबसे पहले स्वयं मसीह की सिद्ध आज्ञाकारिता के लिए निर्देशित किया गया है। पन्निना, एली के पुत्र और एली के पुत्रों के प्रभाव में इस्राएलियों की विफलताएं, मसीह की सच्ची एवं विश्वासयोग्य आराधना के एकदम विपरीत स्थिति में है। और हन्ना, शमूएल एवं शमूएल के प्रभाव में इस्राएल के लोगों द्वारा की गई विश्वासयोग्य आराधना, मसीह द्वारा परमेश्वर की और महान एवं और अधिक सिद्ध आराधना को प्रकट करती है। फिर भी, जिस तरह से शमूएल के मूल श्रोताओं को अपने जीवनों के लिए निष्ठावान आराधना के विषय में मूसा के मानक को लागू करना था, उसी तरह से आराधना के नए नियम वाले मानकों को अपने जीवनों के लिए लागू करने का हमसे आह्वान किया गया है। परमेश्वर, मसीह की कलीसिया से सच्ची एवं विश्वासयोग्य आराधना के माध्यम से कृतज्ञतापूर्ण मानवीय निष्ठा व्यक्त करने की अपेक्षा करता है। जैसा कि यीशु ने यूहन्ना 4:23 में कहा, “सच्चे भक्त पिता की आराधना आत्मा और सच्चाई से करेंगे, क्योंकि पिता अपने लिये ऐसे ही आराधकों को ढूँढ़ता है।”

तीसरे स्थान पर, इन अध्यायों में अवज्ञा के लिए परमेश्वर के अभिशाप और आज्ञाकारिता के लिए आशीषों को नए नियम की दृष्टि से भी देखना चाहिए। इस भाग में परमेश्वर के अभिशापों ने परमेश्वर की आराधना के उल्लंघन के खिलाफ मूल श्रोताओं को चेतावनी दी। और वे मसीह की ओर इशारा करते हैं जिसने, यद्यपि वह पापरहित था, फिर भी उन सभी की ओर से परमेश्वर के अनंत अभिशापों को अपने ऊपर ले लिया, जो उस पर उद्धार देने वाला विश्वास रखते हैं। आज, परमेश्वर अभी भी अपनी कलीसिया को अनुशासित करने और हमें अपनी ओर आकर्षित करने के लिए अस्थायी अभिशाप देता है। इसी तरह से, शमूएल के इस भाग में दिखाई देने वाली अस्थायी आशीषों ने प्रत्येक इस्राएली को विश्वासयोग्य आराधना के लिए प्रोत्साहित किया। ये आशीषें हमें उन महान, अनंत आशीषों की ओर ले जाती हैं, जो स्वयं मसीह, परमेश्वर से प्राप्त करता है। लेकिन साथ में, हमें अपने दैनिक जीवनों के लिए शमूएल के इस भाग में परमेश्वर की आशीषों के निहितार्थों की अनदेखी नहीं करनी चाहिए। जैसे परमेश्वर ने हन्ना, शमूएल और उसकी आज्ञाकारिता के लिए पूरे इस्राएल को आशीष दी, नया नियम सिखाता है कि अपनी कलीसिया को पुरस्कृत करने के लिए मसीह अस्थायी आशीषों को देता है। और ये अस्थायी आशीषें मसीह के विश्वासयोग्य अनुयायियों को उन अनंत आशीषों का स्वाद प्रदान करते हैं जिन्हे हम आने वाले संसार में प्राप्त करेंगे।

जैसा कि हमने अभी देखा, राजशाही के लिए शमूएल की प्रस्तावना के हमारे मसीही अनुप्रयोग को परमेश्वर की वाचाओं की ओर उन्मुख करना महत्वपूर्ण है। लेकिन हमें परमेश्वर के राज्य को आगे बढ़ाने के अपने लेखक के लक्ष्य को भी ध्यान में रखना चाहिए।

### परमेश्वर का राज्य

शमूएल का पहला भाग दर्शाता है कि स्वयं परमेश्वर ने शमूएल के जन्म को निर्देशित किया और परमेश्वर के राज्य को आगे बढ़ाने के लिए इस्राएल के अगुवे के रूप में, शमूएल को ऊँचा उठाया। जैसा कि हम जानते हैं, शमूएल ने बाद में राजा के रूप में दाऊद का अभिषेक किया। और दाऊद के घराने का यह धर्मी शासन था जो एक दिन पूरे संसार के ऊपर परमेश्वर के राज्य की महिमामय जीत की अगुवाई करेगा।



चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट http://thirdmill.org/ पर जाएं।

नया नियम सिखाता है कि यीशु, जो दाऊद का सिद्ध धर्मी पुत्र है, परमेश्वर के राज्य के इस महिमामय जीत को पूरा करता है। फिर भी, वह इस आशा को अप्रत्याशित तरीकों में पूरा करता है। जैसे कि हमने अपने पिछले अध्याय में सीखा था, यीशु तीन चरणों में परमेश्वर के राज्य को पृथ्वी पर लाता है: अपने पहले आगमन के दौरान उसके राज्य का उद्‌घाटन में, संपूर्ण कलीसियाई इतिहास में उसके राज्य की निरंतरता में, और जब वह महिमा में लौटता है तो उसके राज्य की परिपूर्णता में। परमेश्वर के राज्य पर यह तिहरा दृष्टिकोण नए नियम के विश्वास के लिए महत्वपूर्ण है। इस कारण से, हमारी पुस्तक के पहले भाग के प्रत्येक मसीही अनुप्रयोग को मसीह के राज्य के सभी तीन चरणों का ध्यान में रखना चाहिए।

आरंभ करने के लिए, हम मसीह के राज्य के उद्‌घाटन में देख सकते हैं, कि कैसे यीशु ने राजशाही के लिए शमूएल की प्रस्तावना को पूरा करना शुरू किया। शमूएल के दिनों में, परमेश्वर ने शमूएल के नेतृत्व के माध्यम से अपने राज्य को आगे बढ़ाया। और, यीशु के पहले आगमन के दौरान, उसने यीशु के जीवन, मृत्यु और पुनरुत्थान के माध्यम से परमेश्वर के राज्य को नाटकीय रूप से आगे बढ़ाया। क्रूस पर अपनी मृत्यु में, यीशु ने निर्णायक रूप से उस बंधन को तोड़ डाला जिससे शैतान ने इस्राएल और राष्ट्रों को जकड़ रखा था। और जब उसे मृतकों में जिलाया गया, तो उसे पूरी सृष्टि पर अधिकार दिया गया। मत्ती 28:18 में, स्वर्गारोहण से ठीक पहले, यीशु ने यह कहते हुए अपने शिष्यों को आश्वासन दिया, "स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है।" इस मायने में, शमूएल के पहले भाग में जो कुछ परमेश्वर ने अपने राज्य के लिए हासिल किया, उसे हमें इससे भी बड़ी उन चीज़ों की ओर मोड़ना चाहिए, जिन्हें मसीह ने तब हासिल किया जब वह पहली बार दाऊद के सिंहासन पर बैठा।

इसके अलावा, संपूर्ण कलीसियाई इतिहास में अपने राज्य की निरंतरता में, राजशाही के लिए शमूएल की प्रस्तावना को मसीह, अधिक से अधिक पूरा करता है। जैसा कि हमने देखा, शमूएल के जन्म ने हन्ना की आशा को नवीकृत किया, कि परमेश्वर का राज्य पृथ्वी की छोर तक फैलने लगेगा। और सहस्राब्दी के लिए, मसीह ने अपनी कलीसिया को संसार भर में अधिक से अधिक विस्तार के लिए निर्देशित एवं सशक्त किया है। जैसा कि यीशु ने मत्ती 28:19, 20 में अपने शिष्यों से कहा, "इसलिये तुम जाओ, सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ; और उन्हें पिता, और पुत्र, और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो, और उन्हें सब बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ।" इसलिए, जब हम राजशाही के लिए शमूएल की प्रस्तावना को लागू करते हैं, तो हमें अपनी आँखों को इस बात पर लगाना चाहिए कि कैसे मसीह, पवित्र आत्मा की सामर्थ्य के द्वारा, परमेश्वर के राज्य को अपनी कलीसिया के माध्यम से दिन प्रतिदिन फैलाना जारी रखता है।

> मत्ती के पूरे सुसमाचार में, हम यीशु को स्वर्ग के राज्य, परमेश्वर के शासन का प्रचार करता हुआ पाते हैं — यह परमेश्वर के राज्य को कहने का एक दूसरा यहूदी तरीका है। और फिर भी, यीशु विभिन्न तरीकों में पृथ्वी पर अपने अधिकार या अपने राज्य को दिखा रहे हैं: बीमारों को चंगा करना, दुष्टात्माओं का निकालना, तूफना को शांत करना, और इत्यादि ... लेकिन जब आप मत्ती के सुसमाचार के चरमोत्कर्ष पर आते हैं, तो यीशु फिर कहते हैं, उसके जिलाए जाने बाद, और वह स्वर्ग पर जाने वाला है, यीशु कहते हैं, "स्वर्ग और पृथ्वी पर सारा अधिकार मुझे दिया गया है।" और इसलिए, अतंर यह है कि अब यीशु जी उठे हैं, वह ब्रह्माण्ड का राजा है। एक पद जो उसने उद्धृत किया, भजन 110:1 में है जहाँ — "मेरे प्रभु से यहोवा की वाणी यह है: 'तू मेरे दाहिने हाथ बैठ, जब तक कि मैं तेरे शत्रुओं को तेरे चरणों की चौकी न कर दूँ'" — जहाँ यीशु अब पिता के दाहिने हाथ पर है, और वह राज कर रहा है, और वह कहता है कि यह तब तक जारी रहेगा जब तक उसके सारे शत्रुओं को उसके पैरों तले नहीं कर दिया जाता है।

— डॉ. क्रेग एस. कीनर

और निश्चय ही, राजशाही के लिए शमूएल की प्रस्तावना हमें इस बात के लिए भविष्य की ओर देखने के लिए कहती है, जिसे मसीह अपने राज्य की परिपूर्णता के समय करेगा। शमूएल के इन अध्यायों ने मूल श्रोताओं को उस दिन की प्रतीक्षा करने के लिए बुलाहट दी जब दाऊद का घराना परमेश्वर के सभी शत्रुओं का विनाश कर देगा और पूरे संसार भर में परमेश्वर के लोगों के लिए अनंत आशीषों को लाएगा। जब मसीह लौटता है, तो वह शैतान, उसके दुष्ट आत्माओं, और उन प्रत्येक मनुष्यों के ऊपर निर्णायक जीत हासिल करेगा जो परमेश्वर के खिलाफ विद्रोह में उनके साथ शामिल हुए हैं। और इससे भी अधिक, मसीह अपनी जीत की अनंत आशीषों को अपने लोगों पर उँडेलेगा, जब वे नए स्वर्ग और नई पृथ्वी पर अपनी विरासत प्राप्त करते हैं। जैसा कि मत्ती 28:20ख में, यीशु ने अपने शिष्यों को प्रोत्साहित करने के लिए कहा, "[दे]खो, मैं जगत के अन्त तक सदा तुम्हारे संग हूँ।" इसलिए, जब हम राजशाही के लिए शमूएल की प्रस्तावना को लागू करते हैं, तो हमें भी अपनी दृष्टि परमेश्वर के राज्य के भविष्य पर रखनी चाहिए जब हम मसीह की महिमामय वापसी की आशा करते हैं।

अब जबकि हमने राजशाही के लिए शमूएल की प्रस्तावना को देख लिया है, हमें शमूएल की पुस्तक के दूसरे विभाजन की ओर बढ़ना चाहिए, 1 शमूएल 8–2 शमूएल 1 में शाऊल का असफल राजशाही।

## शाऊल की असफल राजशाही

जैसे-जैसे शमूएल का लेखक इस बात को याद करना जारी रखता है कि कैसे परमेश्वर ने दाऊद के राजा बनने से पहले उन घटनाओं को निर्देशित किया था, तो उसने एक कठिन चुनौती का सामना किया। उसे शाऊल के साथ क्या करना चाहिए? यदि दाऊद के घराने का धर्मी शासन परमेश्वर के राज्य की आशा थी, तो फिर शमूएल ने इस्राएल के राजा के रूप में पहले शाऊल का अभिषेक क्यों किया? अब हमारे लेखक ने बड़ी सावधानी के साथ इन मुद्दों को संभाला। उसने स्वीकार किया कि परमेश्वर ने आरंभ में इस्राएल के राजा के रूप में शाऊल का अनुमोदन किया। लेकिन उसने बड़े विस्तार से यह भी समझाया कि क्यों परमेश्वर ने शाऊल और उसके घराने को स्थायी रूप से अस्वीकार किया और उनके स्थान पर दाऊद को प्रतिस्थापित किया।

जिस तरह से हमने अपनी पुस्तक के प्रथम भाग का आंकलन किया, हम उसी तरह से शाऊल की विफल राजशाही का पता लगाएंगे। हम इस प्रभाग की संरचना एवं विषयवस्तु के साथ शुरू करेंगे। और फिर, हम इसके मसीही अनुप्रयोग पर टिप्पणी करेंगे। आइए शाऊल की विफल राजशाही की संरचना और विषयवस्तु को देखें।

### संरचना और विषयवस्तु

शाऊल के शासनकाल का विवरण इतना जटिल है कि मुख्य विषयों पर से जो इसे एक साथ जोड़ते हैं, दृष्टि का हट जाना आसान है — परमेश्वर के राज्य और परमेश्वर की वाचा के विषय। सबसे पहले, कई मायनों में, ये अध्याय इस बात को समझाने के लिए समर्पित हैं कि क्यों दाऊद के घराने को इस्राएल में परमेश्वर के राज्य का नेतृत्व करना चाहिए। अब हमारे लेखक ने यह स्पष्ट कर दिया कि शाऊल ने कई तरीकों से इस्राएल में परमेश्वर के राज्य को आगे बढ़ाया। उसने अपने अधिकार के तहत गोत्रों को



चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट http://thirdmill.org/ पर जाएं।

एकजुट किया और परमेश्वर के शत्रुओं पर कई जीत दिलाने में इस्राएल की अगुवाई की। लेकिन इसी समय, जबकि परमेश्वर शाऊल के साथ धीरज रखता था, परमेश्वर के खिलाफ शाऊल का विद्रोह इतना बड़ा था कि परमेश्वर ने शाऊल और उसके पुत्रों को राजशाही के लिए अयोग्य करार दिया। परमेश्वर के अपने विधि-विधान के द्वारा, शाऊल के बजाय, दाऊद, परमेश्वर के राज्य के गौरवशाली भविष्य की ओर इस्राएल का नेतृत्व करेगा।

दूसरा, हमारे लेखक ने समझाया कि मूसा के साथ परमेश्वर की वाचा की गतिशीलता के संदर्भ में यह सब कैसे हुआ। उसने बार-बार बताया कि कैसे परमेश्वर ने शाऊल के राज्य के दौरान इस्राएल के लिए परोपकारिता दिखाना जारी रखा। लेकिन उसने कृतज्ञतापूर्ण मानवीय निष्ठा की परमेश्वर की शर्त पर भी ध्यान केंद्रित किया। विशेष रूप से, उसने दो प्रमुख शर्तों पर ध्यान केंद्रित किया: आराधना से संबंधित मूसा की व्यवस्था और राजशाही से संबंधित मूसा की व्यवस्था। और उसने बार-बार दिखाया कि कैसे मूसा की व्यवस्था का शाऊल द्वारा उल्लंघन परमेश्वर से गंभीर अभिशापों का कारण बना। उसने यह भी उजागर किया कि कैसे इन व्यवस्थाओं के प्रति दाऊद की आज्ञाकारिता परमेश्वर की आशीषों का कारण बनी। इस भाग के अंत में, शमूएल के लेखक ने शक की कोई गुंजाइश नहीं छोड़ी, कि स्वयं परमेश्वर ने शाऊल और उसके परिवार को, दाऊद और उसके घराने के पक्ष में अस्वीकार कर दिया था।

शाऊल की असफल राजशाही की संरचना और विषयवस्तु मोटे तौर पर हमारी पुस्तक के पहले भाग के समानांतर है। 1 शमूएल 8:1–15:35 में, हमारा लेखक पहले शाऊल के शुरूआती वर्षों को बताता है। फिर उसने 1 शमूएल 16:1–2 शमूएल 1:27 में शाऊल से दाऊद के लिए इस्राएल में नेतृत्व बदलाव पर ध्यान केंद्रित किया। हम शाऊल के शुरूआती वर्षों के साथ शुरू करते हुए, इन दोनों प्रमुख भागों को देखेंगे।

## शाऊल के शुरूआती वर्ष (1 शमूएल 8:1–15:35)।

स्पष्ट रूप से, शमूएल के लेखक ने शाऊल के जन्म और बचपन के बारे में कुछ भी उल्लेखनीय नहीं पाया। शाऊल के शुरूआती वर्षों का उसका रिकॉर्ड एक युवा वयस्क के रूप में शाऊल के साथ शुरू होता है, और 1 शमूएल 8:1–12:25 में, एक राजा के रूप में परमेश्वर द्वारा शाऊल की स्थापना को संबोधित करता है। फिर, 1 शमूएल 13:1–15:35 में, उसकी कहानी, राजा के रूप में शाऊल की परमेश्वर द्वारा अस्वीकृति पर सीधे चली जाती है।

**शाऊल की स्थापना (1 शमूएल 8:1–12:25)।** राजा के रूप में शाऊल की स्थापना में कई प्रकरण शामिल हैं जो चार सममित चरणों में घटित होते हैं। पहला चरण 8:1-22 में राजशाही के विषय में शमूएल की आरंभिक चेतावनी और इस्राएल के लिए एक राजा को खोजने हेतु, शमूएल के लिए परमेश्वर की आज्ञा के साथ प्रकट होती है।

यह शुरूआती प्रकरण इस्राएल के सामने एक गंभीर समस्या के साथ शुरू होता है। शमूएल बूढ़ा हो गया था, और उसके पुत्र लालची, बेईमान और अन्यायी थे। शमूएल के विपरीत, उसके पुत्र परमेश्वर के लोगों की उनके शत्रुओं के ऊपर विजय दिलाने में सक्षम नहीं बन पांएगे। इसलिए, इस्राएल के वृद्ध लोगों ने रामा में शमूएल के पास आकर, अपने ऊपर राज्य करने के लिए एक राजा की मांग की। इस अनुरोध के जवाब में, 1 शमूएल 8:9 में, परमेश्वर ने शमूएल से कहा:

> तू उनकी बात मान; तौभी तू गम्भीरता से उनको भली भाँति समझा दे, और उनको बतला भी दे कि जो राजा उन पर राज्य करेगा उसका व्यवहार किस प्रकार का होगा (1 शमूएल 8:9)।

इसलिए, शमूएल ने 8:11-17 में राजशाही के विषय में एक लंबी चेतावनी जारी की। इस अनुच्छेद में, शमूएल ने व्यवस्थाविवरण 17:14-20 से लेकर कर बोला, जहाँ मूसा ने इस्राएल के भविष्य वाले



चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट http://thirdmill.org/ पर जाएं।

राजाओं के अधिकार को गंभीर रूप से सीमित किया था। शमूएल ने चेतावनी दी कि राजाओं द्वारा इन नियमों का उल्लंघन करने का खतरा रहेगा। उनके पुत्रों को युद्ध में भेजकर, शाही जमीनों की जुताई और कटाई के लिए मजबूर करके, लोगों को युद्ध के हथियार और औजार बनाने के लिए मजबूर करके, उनकी बेटियों को रसोइया और इत्र बनाने वाली बनाकर, उनकी जमानों की चोरी करके, उनकी कमाई का दसवां हिस्सा लेने के द्वारा, और उनके सेवकों, नौजवानों, गधों और भेड़-बकरियां लेने के द्वारा, राजा, इस्राएल के लोगों पर अत्याचार करेगा। अंत में, शमूएल ने चेतावनी दी कि मानवीय राजा परमेश्वर के सभी लोगों को अपना दास बना लेगा। और 8:18 में शमूएल इस अंतिम चेतावनी के साथ समाप्त करता है:

> और उस दिन तुम अपने उस चुने हुए राजा के कारण दोहाई दोगे, परन्तु यहोवा उस समय तुम्हारी न सुनेगा (1 शमूएल 8:18)।

> बाइबल में, जब परमेश्वर ने मनुष्य की रचना की, तो मनुष्य को परमेश्वर के राजशाही अधिकार के लिए समर्पण में उसके राज के अधीन होना था। लेकिन शमूएल के समय में, इस्राएलियों ने देखा कि उनके आसपास के दूसरे देशों के राजा थे, और इसलिए वे अपने लिए एक राजा चाहते थे। और जब परमेश्वर ने देखा कि शमूएल उनके अनुरोध से व्यथित था ... तो उसने उसे परेशान न होने के लिए कहा। उसने शमूएल से कहा, “उनकी बात मान ले। और उनकी बात मानने के बाद ... उन्हें बताना कि राजा चुनने का अर्थ है कि कर देना और अन्य देशों के साथ युद्ध करना होगा। मनुष्यों के द्वारा चुने हुए राजा सभी प्रकार के बोझ लाएंगे। उन्हें यह समझना होगा ... और राजा को याद दिलाना कि उसे परमेश्वर की व्यवस्था को मानना होगा, अर्थात राजा के पास उसे सीमित करने के लिए सीमाएं होंगी। इस प्रकार, परमेश्वर हमें दिखाता है कि मानवीय अधिकारियों को परमेश्वर से नियंत्रण की आवश्यकता है ... परमेश्वर के लिए सम्मान, और लोगों के लिए प्रेम। यही कारण है कि शाऊल के राजा चुने जाने के बाद, परमेश्वर ने उसे अस्वीकार कर दिया — क्योंकि उसने परमेश्वर का सम्मान नहीं किया था।
>
> — रेव्ह. डा. स्टीफन टॉन्ग, अनुवादित

अब, आपको याद होगा कि शमूएल के लेखक ने राजशाही के लिए शमूएल की प्रस्तावना के अपने रिकॉर्ड में आराधना के लिए मूसा के नियमों पर जोर दिया था। और हम देखेंगे कि आराधना पर इस जोर को उसने अपनी पुस्तक के दूसरे भाग में भी दोहराया। लेकिन शाऊल के शासनकाल के अपने रिकॉर्ड की शुरूआत में इस्राएल के लिए शमूएल की चेतावनियों पर ध्यान केंद्रित करने के द्वारा, हमारे लेखक ने मूसा की व्यवस्था के दूसरे पहलू को अग्रभूमि पर लाया: इस्राएल के राजाओं के लिए परमेश्वर की आज्ञा। मूसा की व्यवस्था के इस पहलू ने शाऊल की विफल राजशाही के रिकॉर्ड में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

हालाँकि हमारे लेखक ने इस्राएल को चेतावनी दी थी कि उनका राजा उनके साथ दुर्व्यवहार करेगा, इस भाग का दूसरा चरण परमेश्वर के परोपकार को दिखाता है। 9:1–10:16 में, हमारे लेखक ने राजा के रूप में शाऊल की शमूएल द्वारा स्वीकृति और परमेश्वर की पुष्टि की सूचना दी। परमेश्वर शमूएल को शाऊल के पास ले गया और उसे एक निजी समारोह में शाऊल का अभिषेक करने की आज्ञा दी। जैसा कि हम 10:1 में पढ़ते हैं, “क्या इसका कारण यह नहीं कि यहोवा ने अपने निज भाग के ऊपर प्रधान होने को तेरा अभिषेक किया है?” और इससे भी अधिक, परमेश्वर ने कई चमत्कारी संकेतों के साथ शाऊल के अभिषेक की पुष्टि भी की।

शाऊल की स्थापना की तीसरा चरण परमेश्वर की परोपकारिता को और भी अधिक प्रदर्शित करता है। अध्याय 10:17–11:13, राजा के रूप में शाऊल की राष्ट्रीय स्वीकृति और परमेश्वर की पुष्टि को बताता है। इस्राएल में कुछ समूहों ने संदेह किया कि शाऊल को राजा होना चाहिए। लेकिन परमेश्वर ने शाऊल को इस्राएल के सभी गोत्रों को एकजुट करने और अम्मोनियों पर विजय पाने में नेतृत्व करने हेतु सक्षम बनाया। और इस्राएल में सभी लोगों ने शाऊल को अपना पूरा समर्थन दिया।

फिर भी, इस समय पर जो बड़ी दया परमेश्वर ने शाऊल और इस्राएल को दिखाई उसके बावजूद, इस भाग का चौथा चरण शमूएल की आरंभिक चेतावनियों दोहराता है। 11:14–12:25 में, हमारा लेखक राजशाही के बारे में शमूएल की अंतिम चेतावनियों और परमेश्वर के सौंपे गए कार्य की उसके द्वारा पूर्ति के साथ इस भाग को समाप्त करता है। शमूएल ने इस्राएल से उनके लिए परमेश्वर की परोपकारिता के प्रति आभार प्रकट करने का आह्वान किया। लेकिन उसने उन्हें परमेश्वर के प्रति कृतज्ञतापूर्ण निष्ठा के साथ, परमेश्वर की दया के लिए प्रत्युत्तर देने की भी चेतावनी दी। जैसा कि वह इसे 12:24, 25 में कहता है, "क्योंकि यह तो सोचो कि [परमेश्वर ने] तुम्हारे लिये कैसे बड़े बड़े काम किए हैं। परन्तु यदि तुम बुराई करते ही रहोगे, तो तुम और तुम्हारा राजा दोनों के दोनों मिट जाओगे।"

**शाऊल का ठुकराया जाना (1 शमूएल 13:1–15:35)।** राजा के रूप में शाऊल का स्थापना के अंत में शमूएल की भविष्य-सूचक चेतावनी, जो आगे होने वाला है उसके लिए मंच को तैयार करती है। 13:1–15:35 में, हम राजा के रूप में शाऊल को परमेश्वर द्वारा ठुकराये जाने के विषय में पढ़ते हैं। इन अध्यायों के दौरान, शमूएल के लेखक ने बार-बार ध्यान दिया कि शाऊल ने आराधना के लिए परमेश्वर के नियमों और इस्राएल के राजा के लिए उसकी आज्ञाओं का कैसे उल्लंघन किया। और, परिणामस्वरूप, परमेश्वर ने अपनी वाचा वाले अभिशापों को उँडेला और इस्राएल के सिंहासन से शाऊल और उसके वंशजों को ठुकरा दिया।

शाऊल के ठुकाराये जाने के विषय में हमारे लेखक के रिकॉर्ड में कई प्रकरण शामिल हैं, जो दो मुख्य समूहों में विभाजित होते हैं: 1 शमूएल 13:1–14:52 में शाऊल की पहले वाली अस्वीकृति, और 15:1-35 में शाऊल की अंतिम अस्वीकृति। शाऊल के पहले वाली अस्वीकृति में, हम शाऊल और पलिश्तियों के बीच लड़ाईयों की एक श्रृंखला को देखते हैं। ये लड़ाईयाँ 13:1-4 में पलिश्तियों के खिलाफ इस्राएल के आरंभिक हमलों के साथ शुरू होते हैं। हमें तुरंत ही शाऊल के हृदय और परमेश्वर के लोगों के साथ उसके दुर्व्यवहार की एक झलक मिलती है क्योंकि उसने उन्हें युद्ध के लिए भेजा जबकि वह स्वयं एक सुरक्षित दूरी पर रहा। और इससे भी अधिक, जब शाऊल के पुत्र योनातन ने पलिश्तियों पर विजय प्राप्त की, तो शाऊल ने अपने लिए उस जीत का दावा किया।

इस्राएल के प्रारंभिक हमले के बाद, 13:5-15 में कहानी पलिश्तियों के जवाबी हमले के लिए इस्राएल की तैयारियों के लिए मुड़ती है। शाऊल ने लोगों को युद्ध के लिए तैयार रहने के लिए कहा, लेकिन लोग डर से गए और गुफाओं एवं चट्टानों के बीच में छिप गए। जब सेना तितर-बितर होने लगी, तो शाऊल घबरा गया और शमूएल के निर्देशों की स्पष्ट अवहेलना में उसने परमेश्वर के लिए होमबलि और मेलबलि को चढ़ाया। शमूएल ने शाऊल को आदेश दिया था कि युद्ध से पहले बलिदान चढ़ाने के लिए उसके आगमन की प्रतीक्षा करे। लेकिन शाऊल ने परमेश्वर से डरने और सुरक्षा के लिए परमेश्वर पर भरोसा करने में अपनी सेना का नेतृत्व करने की बजाय स्वयं बलिदान चढ़ाने का निर्णय लिया। जब शमूएल अंततः पहुँचा, तो उसने दंड के विषय में परमेश्वर के वचनों की घोषणा की क्योंकि शाऊल ने परमेश्वर की आराधना का उल्लंघन किया था। 13:14 में, शमूएल ने शाऊल से यह कहा:

> परन्तु अब तेरा राज्य बना न रहेगा; यहोवा ने अपने लिये एक ऐसे पुरुष को ढूँढ़ लिया है जो उसके मन के अनुसार है; और यहोवा ने उसी को अपनी प्रजा पर प्रधान होने को ठहराया है (1 शमूएल 13:14)।



चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट http://thirdmill.org/ पर जाएं।

शाऊल की पहले वाली अस्वीकृति के विषय में हमारे लेखक का वृत्तांत 13:16–14:46 में पलिश्तियों के साथ इस्राएल की आगामी युद्ध में जारी रहता है। शुरू करने के लिए, हम एक और तरीके के बारे में पढ़ते हैं जिसमें शाऊल ने अपने शाही अधिकार का दुरुपयोग किया। लापरवाही करके, उसने अपनी सेना को लोहे की तलवारों और भालों को उपलब्ध कराने की उपेक्षा की। इसके विपरीत, उसने इन्हें सिर्फ अपने और अपने पुत्र योनातन के लिए उपलब्ध कराया।

हमारे लेखक ने इस बात को भी बताया कि पहले शाऊल युद्ध से दूर रहा। केवल तब जब योनातन परमेश्वर पर बड़े विश्वास के साथ युद्ध में कुद पड़ा, और पलिश्तियों में भगदड़ मच गई, कि शाऊल ने युद्ध में भाग लिया। लेकिन फिर भी, शाऊल ने परमेश्वर की आराधना का उल्लंघन किया। शाऊल ने अहिय्याह याजक से परमेश्वर के सन्दूक को लाने के लिए कहा ताकि वे युद्ध के लिए तैयारी कर सकें। लेकिन जब पलिश्तियों का हमला निकट जान पड़ा, तो शाऊल ने याजक को रोका और बिना उचित तैयारी के युद्ध में कूद पड़ा।

शाऊल ने अपनी सेना के साथ और भी दुर्व्यवहार किया। शाऊल पलिश्तियों का पीछा करने के लिए इतना उत्सुक था कि उसने खाने के लिए रुकने वाले किसी भी सैनिक पर एक अभिशाप की घोषणा की। विडंबना यह है कि, योनातन ने — जो इस खतरे के बारे में नहीं जानता था — थोड़ा सा शहद खा लिया। और जब शाऊल के सैनिकों ने उस डांटा, तो योनातन ने कहा कि उसका पिता कितना मूर्ख था। 14:29, 30 में, योनातन ने कहा, “मेरे पिता ने लोगों को कष्ट दिया है ... यदि आज लोग ... मनमाना खाते, तो कितना अच्छा होता; अभी तो बहुत अधिक पलिश्ती मारे नहीं गए।”

युद्ध के बाद, शाऊल की ज़िद कि उसके सैनिक नहीं खाएंगे, आराधना के एक और गंभीर उल्लंघन की ओर ले गई। शाऊल के जवान इतने भूखे थे कि उन्होंने लूट में से जानवरों को जल्दी से मारा और लहू सहित खा गए — ऐसा कार्य जिसकी लैव्यवस्था 17:10 में सख्त मनाही थी। शाऊल को यह याद दिलाने के बाद ही कि इस कार्य ने परमेश्वर की व्यवस्था का उल्लंघन किया कि उसने अपने पुरुषों के लिए उनके जानवरों को मारने के लिए एक वेदी बनाई, जैसा कि परमेश्वर ने आज्ञा दी थी। और हमारे लेखक ने 14:35 में टिप्पणी करते हुए शाऊल के प्रयासों को और कम किया, “वह तो पहली वेदी है जो उस ने यहोवा के लिये बनवाई।”

उस समय पर, शाऊल ने मार्गदर्शन के लिए अंततः परमेश्वर से पूछताछ की, लेकिन 14:37 के अनुसार, “परन्तु [परमेश्वर से] उसे उस दिन कुछ उत्तर न मिला।” अब, याजकों की मदद से, शाऊल को पता चला कि परमेश्वर ने उसको उत्तर नहीं दिया क्योंकि योनातन ने उस मूर्खतापूर्ण शपथ का उल्लंघन किया था जिसे शाऊल ने अपनी सेना से खाई थी। और एक बार फिर शाऊल ने अपने दमनकारी शासन को यह आदेश देते हुए प्रकट किया — जिसने लड़ाई का नेतृत्व किया था — उसको मरना होगा। सिर्फ तभी,जब सैनिकों ने योनातन के लिए फिरौती दी कि शाऊल ने उसे नहीं मारा।

अंत में, 14:47-52 में, शमूएल का लेखक शाऊल की पहले वाली अस्वीकृति के अपने रिकॉर्ड को, शाऊल के शासनकाल में युद्धों और उसकी सेना का नेतृत्व करने वाले अधिकारियों के एक सारांश के साथ समाप्त करता है। लेकिन उसने इस अशुभ वाक्य को पद 52 में जोड़ा: “शाऊल जीवन भर पलिश्तियों से संग्राम करता रहा।” उन विजयों के विपरीत जिन्हें परमेश्वर ने शमूएल को दिए थे, परमेश्वर ने शाऊल को इस हद तक ठुकरा दिया था कि उसने कभी भी निर्णायक रूप से पलिश्तियों को नहीं हराया। और इससे भी अधिक, हम पद 52 में भी पढ़ते हैं, “जब जब शाऊल को कोई वीर या अच्छा योद्धा दिखाई पड़ा, तब तब उसने उसे अपने पास रख लिया।” जिस तरह शमूएल ने चेतावनी दी थी, वैसे ही अपने अंतहीन युद्धों में जितना हो सके परमेश्वर के लोगों को जबरदस्ती भरती करके, शाऊल ने उन पर जुल्म करना जारी रखा।

शाऊल की परमेश्वर द्वारा पहले वाली अस्वीकृति की रिपोर्ट करने के बाद, हमारा लेखक 15:1-35 में, शाऊल की अंतिम अस्वीकृति की ओर मुड़ा, जहाँ उसने अमालेकियों के साथ शाऊल की लड़ाई के

बारे में बताया। निर्गमन 17:14-16 और गिनती 24:20 के अनुसार, परमेश्वर ने अमालेकियों के संपूर्ण विनाश की आज्ञा दी थी, क्योंकि उन्होंने मूसा के दिनों में इस्राएल को बहुत अधिक कष्ट दिया था। और शाऊल को युद्ध में भेजने से पहले, शमूएल ने उसे मूसा की व्यवस्था में संहिताबद्ध उस दिव्य आदेश के विषय में याद दिलाया।

लेकिन अमालेकियों पर बड़ी जीत के बाद भी, शाऊल ने परमेश्वर की आज्ञा का पालन नहीं किया। 15:9 के अनुसार, शाऊल और उसके पुरुष लूट में से सबसे अच्छी वस्तुओं को नष्ट करने के लिए तैयार नहीं थे। परन्तु, "जो कुछ तुच्छ और निकम्मा था उसका उन्होंने सत्यानाश किया।" जैसा कि हमने दूसरी श्रृंखलाओं में समझाया, "सत्यानाश के लिए समर्पित," वाक्यांश इब्रानी क्रिया *खारम* (חָרַם) का अनुवाद करता है। इस शब्दावली ने संकेत दिया कि इस्राएल के युद्धों में सत्यानाश के लिए जो कुछ भी परमेश्वर ने आदेश दिया वह परमेश्वर की स्तुति के लिए आराधना वाला एक बलिदान था। लेकिन शाऊल अपने जीवन में इस समय पर परमेश्वर की आराधना से इतना दूर हो गया था कि, न सिर्फ उसने लूट में से सबसे अच्छा परमेश्वर से बचा कर रख लिया, लेकिन पद 12 में हम पढ़ते हैं कि उसने अपने लिए एक स्मारक स्थापित किया। और, जब शमूएल ने शाऊल का सामना किया, तो शाऊल ने अपनी सेना पर झूठा दोष लगाया। इसलिए, 15:28 में, जैसे कि यहोवा ने निर्देश दिया था, शमूएल ने शाऊल के लिए इन भयावह वचनों को बोला:

> आज यहोवा ने इस्राएल के राज्य को फाड़कर तुझ से छीन लिया, और तेरे एक पड़ोसी को जो तुझ से अच्छा है दे दिया है (1 शमूएल 15:28)।

और शमूएल ने पद 29 में यह जोड़ा कि परमेश्वर का न्याय अपरिवर्तनीय था:

> जो इस्राएल का बलमूल है वह न तो झूठ बोलता और न पछताता है; क्योंकि वह मनुष्य नहीं है कि पछताए" (1 शमूएल 15:29)।

> शाऊल एक राजा के रूप में विफल रहा, और उसका राज्य विफल हो गया, क्योंकि उसके पास आवश्यक आत्मिक गुण एवं योग्यताएँ नहीं थीं। उसके पास कौशल एवं योग्यताओं के संबंध में कुछ बाहरी गुण थे। फिर भी, उसने यहोवा के प्रति अपना हृदय समर्पित नहीं किया, और उसने यहोवा के वचनों का पालन नहीं किया। उदाहरण के लिए, एक विशेष एवं महत्वपूर्ण घटना है जब परमेश्वर ने उसे अमालेकियों से लड़ने के लिए भेजा और अमालेकियों को सत्यानाश के लिए समर्पित करने के लिए कहा। और उस समय यह समझा जाता था कि अमालेकियों को सत्यानाश के लिए समर्पण करने का क्या अर्थ था। शाऊल ने यह नहीं किया। इसके बजाय उसने राजा और भेड़ों में से सबसे अच्छे को जीवित छोड़ दिया। जब शमूएल उसके पास आया और इस बारे में उससे पूछा, तो शाऊल ने ऐसे काल्पनिक बहानों के साथ अपनी अवज्ञा को उचित ठहराया जिनके कोई मायने नहीं थे। इसलिए, परमेश्वर ने कहा, "उसने मेरे पीछे चलना छोड़ दिया, और मेरी आज्ञाओं का पालन नहीं किया।" ये यहोवा के वचन हैं। यह इसके समान है कि परमेश्वर कह रहा था, "मैंने उसे अस्वीकार कर दिया है क्योंकि उसने मुझे अस्वीकार कर दिया है।" शाऊल एक विद्रोही व्यक्ति था, और शमूएल विद्रोह के बारे में एकदम स्पष्ट था। उसने कहा, "बलवा करना और भावी कहनेवालों से पूछना एक ही समान पाप है।" शाऊल एक विद्रोही और घमंडी व्यक्ति था। उसने परमेश्वर की आज्ञाओं के प्रति समर्पण नहीं किया और परमेश्वर की इच्छा को पूरा नहीं किया, इसलिए परमेश्वर ने उसे राजा होने से अस्वीकार कर दिया।



चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट http://thirdmill.org/ पर जाएं।

— रेव्ह. डा. ईमद ए. मिकाएल, अनुवादित

हालाँकि शाऊल ने पश्चाताप का दिखावा किया और क्षमा माँगी, लेकिन उसके विषय में परमेश्वर की अस्वीकृति निर्णायक थी। जब शमूएल ने अमालेकिओं के राजा को तलवार से मार डाला, वह शाऊल को छोड़ कर चला गया और उसे फिर कभी नहीं देखा। परमेश्वर ने शाऊल को कई वर्षों तक परोपकारिता दिखाई, लेकिन शाऊल परमेश्वर के प्रति इतना विश्वासघाती था कि अब वह आगे को राजा नहीं रहेगा।

हमने देखा कि कैसे परमेश्वर ने शाऊल को उसके शासनकाल के शुरूआती वर्षों में एक राजा के रूप में स्थापित और अस्वीकार किया। अब, आइए 1 शमूएल 16:1–2 शमूएल 1:27 में शाऊल से दाऊद के लिए शाही नेतृत्व बदलाव पर ध्यान दें।

## नेतृत्व में बदलाव (1 शमूएल 16:1–2 शमूएल 1:27)।

बहुत कुछ हमारी पुस्तक के पहले भाग में एली के परिवार से शमूएल के लिए बदवाव के समान ही, ये अध्याय शाऊल और दाऊद के बीच कई विरोधाभास को प्रस्तुत करते हैं, जो बताते है कि क्यों शाऊल के स्थान पर दाऊद राजा बना।

इन अध्यायों के सार को समझने के लिए, हमें यब याद रखना चाहिए कि प्राचीन संसार में अपने राजा के खिलाफ बगावत का नेतृत्व करना युवा एवं सफल योद्धाओं के लिए एक बहुत आम बात थी। इसलिए, इस्राएल में कई लोगों के लिए यह मानना स्वाभाविक ही था कि दाऊद ने शाऊल के खिलाफ बगावत का नेतृत्व किया था। लेकिन इन अध्यायों में हमारे लेखक ने गलत धारणा को सही किया। दाऊद ने शाऊल के खिलाफ बगावत नहीं की थी। इसके विपरीत, जबकि शाऊल ने दाऊद के खिलाफ शत्रुता बढ़ाई, फिर भी दाऊद उसका विनम्र सेवक बना रहा। तो फिर दाऊद ने इस्राएल के राजा के रूप में शाऊल का स्थान कैसे लिया? हमारे लेखक ने समझाया कि परमेश्वर कार्य कर रहा था। परमेश्वर ने स्वयं शाऊल पर उसके विद्रोह के कारण अभिशाप और दाऊद पर उसकी विनम्र सेवा के लिए आशीषों को उँडेलने के द्वारा इन व्यक्तियों की परिस्थितियों को उलट दिया।

इस नेतृत्व बदलाव के दौरान अभिशापों एवं आशीषों को परमेश्वर द्वारा उलट दिए जाने का हमारे लेखक का वृत्तांत चार मुख्य चरणाों में विभाजित होता है: 16:1-23 में दाऊद के प्रति शाऊल की शत्रुता की पृष्ठभूमि; 17:1–23:28 में दाऊद के खिलाफ शाऊल की शत्रुता में बढ़ावा; 23:29–27:12 में शाऊल की शत्रुता में कमी; और 1 शमूएल 28:1–2 शमूएल 1:27 में शाऊल की शत्रुता का दुष्परिणाम।

**शत्रुता की पृष्ठभूमि (1 शमूएल 16:1-23)।** पहला चरण — शाऊल की शत्रुता की पृष्ठभूमि का — इन अध्यायों में होने वाली प्रत्येक घटना के पीछे कार्य करने वाली आत्मिक शक्तियों को प्रकट करती हैं। पहले दो प्रकरणों में, 16:1-13 दाऊद और परमेश्वर की आत्मा के बारे में बताता है। इस प्रकरण में, परमेश्वर ने शमूएल से उसके गृह नगर रामा से बेतलेहेम को जाने के लिए कहा, जहाँ उसने दाऊद को इस्राएल का नया राजा बनाने की प्रक्रिया शुरू की।

परमेश्वर ने दाऊद को एक निजी समारोह में राजा के रूप में अभिषेक करने की शमूएल को आज्ञा देकर, उसे आशीषित किया। और जब दाऊद का अभिषेक किया गया, तो उस पर एक और उल्लेखनीय आशीष आई। 16:13 में हम पढ़ते हैं कि “परमेश्वर का आत्मा” — इब्रानी में *रूआख याहवेह* (רוּחַ־יְהוָה) — “उस दिन से लेकर भविष्य तक आत्मा दाऊद पर बल से उतरता रहा।” शमूएल के लेखक ने यह स्पष्ट किया कि परमेश्वर का आत्मा “उस दिन से लेकर भविष्य तक” उन कई अच्छे कार्यों का स्रोत था जो दाऊद ने किए। 16:18 और 18:12, 14 और 28 में हमारे लेखक ने इस तथ्य पर प्रकाश डालने के द्वारा इस दृष्टिकोण को स्पष्ट रूप से बल दिया कि महत्वपूर्ण क्षणों पर यहोवा दाऊद के साथ था।

शाऊल की शत्रुता की पृष्ठभूमि को बताने वाला दूसरा प्रकरण 16:14-23 में शाऊल और एक दुष्ट आत्मा पर रिपोर्ट करने के द्वारा एक स्पष्ट विरोधाभास को दिखाता है। ये पद उस समय पर ध्यान केंद्रित

करते हैं जब दाऊद शाऊल की राजधानी, गिबा नगर में नियमित रूप से शाऊल की सेवा करने के लिए आता है। हम सटीक रूप से निश्चित नहीं हो सकते कि कब ये घटनाएँ घटी, क्योंकि जो प्रकरण इसके बाद होता है उसमें शाऊल ने दाऊद को नहीं पहचाना।

शुरूआत, 16:14 में, परमेश्वर की ओर से दो अभिशापों को बताता है जो इस समय शाऊल पर आए: "यहोवा का आत्मा शाऊल पर से उठ गया, और यहोवा की ओर से एक दुष्ट आत्मा" — या जैसा कि इब्रानी में अनुवाद किया जा सकता है "बुरी आत्मा," — "उसे घबराने लगा।" इन अध्यायों में बाद में, हमारे लेखक ने इन अभिशापों के प्रभावों का स्पष्ट रूप से उल्लेख किया। पवित्र आत्मा के उठ जाने ने शाऊल को 18:12 में डरपोक बना दिया और बुरी आत्मा ने 18:10 और 19:9 में शाऊल को पागलपन में डाल दिया। जैसा कि शमूएल के लेखक ने भी उल्लेख किया, जब बुरी आत्मा ने शाऊल को पीड़ित किया तो शाऊल के लोग उसकी मदद करने के लिए दाऊद को ले आए। शाऊल के लोगों ने दाऊद को एक कुशल संगीतकार, एक बहादुर योद्धा और एक विवेकपूर्ण वक्ता के रूप में वर्णित किया। लेकिन सबसे महत्वपूर्ण बात, उन्होंने कही कि, शाऊल के विपरीत, यहोवा दाऊद के साथ था। हमारे लेखक ने इस प्रकरण के अंत में शाऊल और दाऊद के बीच इस विरोधाभास की पुष्टि की जहाँ उसने बताया कि जब दाऊद वीणा बजाता, तो शाऊल को पीड़ा देने वाली बुरी आत्मा निकल जाती थी।

**शाऊल की शत्रुता में बढ़ावा (1 शमूएल 17:1–23:28)।** 17:1–23:28 में, शाऊल से दाऊद के लिए बदलाव का दूसरा चरण, दाऊद के खिलाफ शाऊल की शत्रुता के बढ़ने के दौरान परमेश्वर की आशीषों एवं अभिशापों पर ध्यान केंद्रित करता है। 17:1–18:9 में ये अध्याय शाऊल की शुरूआती शत्रुता को बताते हुए एक कहानी से शुरू होते हैं। यहाँ, हम शमूएल की पुस्तक में सबसे लंबी एकल कहानी को पाते हैं, जिसे आमतौर पर दाऊद और गोलियत की कहानी के रूप में जाना जाता है। हमारे लेखक ने बताया कि शाऊल और उसकी सेना ने गिबा को छोड़ा और अजेका और सोको के निकट पलिश्तियों के खिलाफ युद्ध की पाँति बाँधी। यह यहाँ पर था कि महान योद्धा गोलियत ने इस्राएल को उससे लड़ने की चुनौती दी। सभी संभावनाओं में, यह प्रकरण शाऊल के दरबार में दाऊद की सेवा से पहले हुआ, क्योंकि, 17:58 में, शाऊल ने दाऊद से पूछा कि वह कौन था।

इस प्रसिद्ध कहानी में शाऊल और दाऊद के बीच कई असाधारण विरोधाभास दिखाई देते हैं। उदाहरण के लिए, 17:11 में, शाऊल और उसकी सेना ने जब गोलियत की धमकियों को सुना तो वे हतोत्साहित और बहुत भयभीत हो गए थे। लेकिन परमेश्वर की आत्मा ने एक युवा, सरल चरवाहे लड़के, दाऊद को साहस एवं विश्वास के साथ आशीष दी। 17:45-47 में, दाऊद ने गोलियत को जवाब देते हुए कहा, "मैं सेनाओं के यहोवा के नाम से तेरे पास आता हूँ, जो इस्राएली सेना का परमेश्वर है, ... इसलिये कि संग्राम तो यहोवा का है।" गोलियत पर दाऊद की जीत ने दूसरों से समर्थन की आशीष भी दिलाई। शुरूआत करने के लिए, शाऊल के पुत्र, योनातन ने, दाऊद से बहुत गहरा प्रेम किया। इसके अलावा, युद्ध के बाद जब शाऊल और दाऊद गिबा से लौटे, तो महिलाओं ने एक गीत गाया जिसने दाऊद की महान सफलता का गुणगान किया। लेकिन दाऊद के लिए इस समर्थन ने शाऊल को क्रोधित किया। जैसा कि 18:8, 9 हमें बताता है, "तब शाऊल अति क्रोधित हुआ, और [दाऊद के लिए प्रशंसा का गीत] उसको बुरी लगी; ... उस दिन से शाऊल दाऊद की ताक में लगा रहा।"

> इस तरह, अक्सर दाऊद और गोलियत की कहानी को आमतौर पर दाऊद की जीत की कहानी के रूप में बताया जाता है, लेकिन वास्तव में, यह शाऊल की हार की कहानी है। और जब हमें पता चलता है कि इस्राएल के लोगों ने शाऊल को राजा क्यों चुना, तो उसके कद के बारे में बहुत बड़ी बात बनाई गई। वह किसी अन्य की तुलना में कम से कम एक सिर लंबा है। इसलिए, जब यह विशाल पलिश्ती एलाह घाटी में निकलता है और परमेश्वर की सेनाओं का विरोध करता है, तो जिस स्वाभाविक, तार्किक व्यक्ति को उससे लड़ना चाहिए वह शाऊल है,



चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट http://thirdmill.org/ पर जाएं।

> क्योंकि वह हर किसी से लंबा है। और इस तरह, शाऊल ऐसा करने से मना कर देता है। और इसलिए अब दाऊद सामने आता है। शाऊल यहाँ तक प्रयास करके दाऊद को अपना कवच का उपयोग करने की अनुमति देता है, लेकिन वह उसे पहनता है और पाता है कि वह बहुत बड़ा है, और इसलिए शायद अपना कवच उसे देने में शाऊल एक अच्छा, उदार व्यक्ति नहीं था। वह दिखाने की कोशिश कर रहा था, "ठीक है, यदि तुम मेरा कवच पहनते हो और गोलियत से लड़ने को जाते हो, तो लोग शायद सोचेंगे कि मैं ऐसा कर रहा हूँ।" लेकिन दाऊद ने उस पहचान को उतार फेंका, यदि आप मानें तो। पूरे शमूएल की पुस्तकों में कपड़े एक बहुत बड़ी बात है। यह हमेशा पहचान के साथ जुड़ी है। इसलिए, दाऊद ने सिर्फ चरवाही के औजारों को रखकर, न सिर्फ शाऊल के कवच को बल्कि उसकी पहचान को भी नकार दिया। इस तरह, इस खतनारहित पलिश्ती का सामना करने के लिए जो परमेश्वर की निंदा कर रहा है, एक लंबे, शक्तिशाली, कवचधारी राजा की तुलना में परमेश्वर के साथ, चरवाही के औजार एक इस्राएली राजा के लिए उत्तम हैं। इस तरह, इस कहानी का महत्व वास्तव में ऐसे राजा के लिए परमेश्वर की प्राथमिकता है जो पूरी तरह से उस पर भरोसा रखता है, न कि संसार की दृष्टि से ऐसा दिखना जैसे कि उसके पास एक अच्छा अगुवा होने के लिए सारी योग्यताएँ हैं।
>
> — प्रो. जैफरे ए.वोक्मर

जब हम 18:10–19:17 में शाऊल की प्रारंभिक शत्रुता से उसकी अप्रत्यक्ष शत्रुता की ओर बढ़ते हैं, तो नाटक की तीव्रता बढ़ जाती है। इन प्रकरणों में सभी घटनाक्रम मुख्य रूप से गिबा नगर में होते हैं जहाँ शाऊल ने दूसरों से दाऊद को मरवाने की कोशिश की। ये पद चार सरल प्रकरणों में विभाजित होता हैं। सबसे पहले, 18:10-16 में, शाऊल ने छापे मारने के लिए दाऊद को भेजने के द्वारा दाऊद की मृत्यु को चाहा। स्पष्ट रूप से, शाऊल ने आशा की कि दाऊद इन हमलों में मर जाएगा। हम यह भी पढ़ते हैं कि इसी समय के दौरान, शाऊल ने दाऊद पर अपना भाला फेंका। लेकिन शाऊल द्वारा दाऊद को मरवाने के प्रयासों के बावजूद, परमेश्वर ने दाऊद को आशीषित किया। अध्याय 18:14 हमें बताता है, "और दाऊद अपनी समस्त चाल में बुद्धिमानी दिखाता था; और यहोवा उसके साथ-साथ था।" और दाऊद की सफलताओं के कारण, शाऊल ईर्ष्या और भय के अभिशाप तहत हो गया। लेकिन परमेश्वर ने दाऊद को लोगों से बढ़ती प्रशंसा के साथ आशीषित किया।

18:17-30 में, दूसरे प्रकरण में, शाऊल ने पलिश्तियों के द्वारा दाऊद को मरवाना चाहा। गिबा में रहने के दौरान, शाऊल ने अपनी बेटी मिकल से विवाह की प्रतिज्ञा करने के द्वारा पलिश्तियों के खिलाफ और अधिक आक्रामक बनने के लिए दाऊद को लुभाया। शाऊल ने पलिश्तियों के द्वारा दाऊद को मरवाने की अपेक्षा की। इसलिए, जब दाऊद सफलतापूर्वक युद्ध से लौटा, तो शाऊल ने मिकल को किसी अन्य पुरुष को दे दिया था। शाऊल ने फिर कोशिश की। उसने दाऊद को अपनी छोटी बेटी विवाह में देने की प्रतिज्ञा की, यदि दाऊद एक सौ पलिश्ती खलड़ियों के साथ लड़ाई से लौटता है। दाऊद इतना सफल हुआ कि वह 200 पलिश्ती खलड़ी को ले कर आया। जैसा कि हम आशा कर सकते हैं, परमेश्वर ने शाऊल को एक बार फिर भय के साथ श्रापित किया, और दाऊद का उसका डर और बढ़ गया। शाऊल ने देखा कि मिकल दाऊद से प्रेम रखती है। और पद 30 में हमारे लेखक ने जोड़ा, "दाऊद ने शाऊल के अन्य सब कर्मचारियों से अधिक बुद्धिमानी दिखाई; इससे उसका नाम बहुत बड़ा हो गया।"

19:1-8 में, तीसरे प्रकरण में, शाऊल ने खुलेआम दाऊद की हत्या का आदेश योनातन और अपने दरबार के सेवकों के माध्यम से दिया। लेकिन परमेश्वर ने आशीष दी जब योनातन ने इनकार कर दिया।

वास्तव में, दाऊद की निर्दोषता की घोषणा करते और यह बताते हुए कि दाऊद ने शाऊल को किस तरह से लाभ पहुंचाया है, योनातन ने भी अपने पिता को डांटा। शाऊल ने अपने गलत काम को स्वीकार किया और दाऊद को हानि न पहुँचाने की झूठी कसम खाई। और 19:8 में, हमारे लेखक ने लिखा कि "और दाऊद जाकर पलिश्तियों से लड़ा, और उन्हें बड़ी मार से मारा, और वे उसके सामने से भाग गए।"

19:9-17 में, दाऊद के प्रति शाऊल की अप्रत्यक्ष शत्रुता के चौथे एवं अंतिम प्रकरण में, शाऊल ने दूतों या हत्यारों के माध्यम से दाऊद को मारना चाहा। पद 9 हमें बताता है कि परमेश्वर का अभिशाप एक बार फिर शाऊल के ऊपर आता है कि "तब यहोवा की ओर से एक दुष्ट आत्मा शाऊल पर चढ़ा," और फिर, शाऊल ने दाऊद को अपने भाले से मारने का प्रयास किया। लेकिन दाऊद अपने घर भाग गया। शाऊल ने दाऊद को मारने के लिए उसके घर दूतों को भेजा। लेकिन एक बार फिर परमेश्वर ने दाऊद को आशीष दी, और मिकल ने — जो अब दाऊद की पत्नी थी — रात के दौरान भागने में उसकी मदद की।

अन्य लोगों द्वारा दाऊद को मरवाने के शाऊल के प्रयासों पर ध्यान केंद्रित करने के बाद, 19:18–23:28 में हमारा लेखक शत्रुता के बढ़ावे की ओर मुड़ता है जो दाऊद के खिलाफ शाऊल की प्रत्यक्ष शत्रुता के माध्यम से हुई। ये अध्याय जब शाऊल ने विभिन्न स्थानों में दाऊद का पीछा किया, तो दाऊद पर परमेश्वर की आशीषों का और शाऊल पर अभिशापों का पता लगाते हैं ।

सबसे पहले, 19:18-24 में रामा में शाऊल, दाऊद और शमूएल के खिलाफ आया। गिबा में शाऊल द्वारा भेजे गए हत्यारों से बचने के बाद, दाऊद शमूएल के गृह नगर रामा को भाग गया जहाँ शमूएल के निर्देशन के तहत भविष्यद्वक्ताओं के एक समूह के साथ वह रहता था। दाऊद ने शमूएल को बताया कि क्या हुआ था, और उन दोनों ने पास के नबायोत में शरण ली। पहले के समान, दाऊद को मारने के लिए शाऊल ने दूतों को भेजा, लेकिन परमेश्वर की आत्मा ने नाटकीय रूप से दाऊद को सुरक्षा की आशीष दी। तीन बार शाऊल ने दूतों को भेजा, लेकिन हर बार आत्मा ने उन्हें इतना अभिभूत कर दिया के वे अपने मिशन को पूरा नहीं कर सके। इसलिए, हताशा में, शाऊल स्वयं नबायोत गया। लेकिन पवित्र आत्मा ने उस पर लज्जा लाने के द्वारा शाऊल को श्रापित किया। परमेश्वर की आत्मा से अभिभूत होकर, शाऊल ने अपने कपड़े उतार डाले और दाऊद को मारने के बजाय नबूवत करने लगा।

दूसरा, 20:1-42 में, हम दाऊद और योनातन के खिलाफ शाऊल की प्रत्यक्ष शत्रुता को देखते हैं। दाऊद ने शमूएल को रामा में छोड़ा और गिबा लौटा जहाँ उसने योनातन से अपनी बेगुनाही का नम्रतापूर्वक आग्रह किया। और परमेश्वर ने एक बार फिर योनातन के समर्थन के साथ दाऊद को आशीष दी। साथ में, उन्होंने यह जानने का एक तरीका निकाला कि क्या शाऊल अब भी दाऊद को मारने का इरादा रखता है। जब शाऊल ने योनातन को दाऊद के लिए उसकी निष्ठा के लिए फटकारा, तो योनातन ने जान लिया कि उसका पिता अभी भी दाऊद की मृत्यु चाहता है। इसलिए, योनातन ने यह कहकर दाऊद को पद 42 में अपने स्थायी समर्थन की आशीष देते हुए भेजा, "यहोवा मेरे और तेरे मध्य, और मेरे और तेरे वंश के मध्य में सदा रहे।"

तीसरा, 21:1–23:13 में, कई प्रकरण मिलाप वाले तम्बू पर दाऊद और याजकों के खिलाफ शाऊल की आक्रामकता पर ध्यान केंद्रित करते है। यह भाग गिबा से नोब तक दाऊद की यात्रा के साथ शुरू होता है, जहाँ मिलाप वाला तम्बू एवं उसके याजक स्थित थे। विभिन्न मोड़ तोड़ के माध्यम से, दाऊद ने कुछ समय के लिए पलिश्तियों के गत, अदुल्लाम की गुफा, और मोआब के मिसपा तक यात्रा की। अंत में, वह यहूदा के कीला नगर में परमेश्वर के महायाजक के साथ कुछ समय रहा।

जब दाऊद नोब में मिलाप वाले तम्बू पर पहुँचा, तो उसने अहीमेलक से अपने पुरुषों और अपने लिए रोटी माँगी। अहीमेलक ने बताया कि वहाँ मिलाप वाले तम्बू में यहोवा के सम्मुख रखी जाने वाली पवित्र रोटी को छोड़कर और कोई रोटी नहीं थी। अहीमेलेक के लिए दाऊद के जवाब ने इस समय दाऊद पर परमेश्वर की आशीष को बताया। जैसा कि पद 5 में दाऊद कहता है, "जवानों के बर्तन पवित्र होते हैं, यद्यपि यात्रा साधारण होती है। तो आज उनके बर्तन अवश्य ही पवित्र होंगे?" अहिमेलेक ने दाऊद को उस

दिन की बची हुई पवित्र रोटी दी। और इससे अधिक, जब दाऊद ने हथियार के लिए पूछा, तो अहिमेलेक ने दाऊद के लिए परमेश्वर की स्वीकृति का एक उपयुक्त चिन्ह, गोलियत की तलवार उसे दी।

इन कहानियों में, हमें यह देखने के लिए सावधान रहना चाहिए कि कैसे शमूएल के लेखक ने दाऊद के कार्यों के विषय में अपने श्रोताओं द्वारा मूल्यांकन में उनका मार्गदर्शन करने के लिए सूक्ष्म सुराग दिए। सतह पर, दाऊद द्वारा पवित्र रोटी खाने ने प्रश्नों को खड़ा किया क्योंकि लैव्यवस्था 24:5-9 हारून के पुत्रों को पवित्र रोटी खाने की आज्ञा देता है। इसलिए, यह कोई छोटी बात नहीं थी कि लेखक ने जवानों की पवित्रता और दाऊद द्वारा गोलियत की तलवार को प्राप्त करने का उल्लेख किया। इन विवरणों ने शाऊल की निष्ठाहीनता के विपरीत, परमेश्वर के प्रति दाऊद की निष्ठा पर प्रकाश डाला, और इस समय पर दाऊद के लिए परमेश्वर की स्वीकृति की पुष्टि की। तो फिर, इसमें कोई आश्चर्य नहीं, कि यीशु ने लूका 6:3 में इस घटना का संदर्भ दिया, जब उसने अपने शिष्यों का झूठे आरोप के खिलाफ बचाव किया, कि उन्होंने अनाज बटोरने के द्वारा सब्त को तोड़ा था। मूल श्रोताओं को यह समझने में मदद करने के लिए कि उन्हें दाऊद के कार्यों का मूल्यांकन कैसे करना था, इन सभी अध्यायों में इस तरह से सूक्ष्म सुराग मिलते हैं।

अब, दोएग नामक एक एदोमी था जो उस समय नोब में शाऊल के चरवाहों का प्रमुख था। यह जानते हुए कि दोएग जरूर से दाऊद के ठिकाने का पता शाऊल को बताएगा, दाऊद भाग जाता है। वह कुछ समय के लिए पलिश्ती नगर गत को गया जहाँ पागल मनुष्य के समान नाटक करने के द्वारा परमेश्वर ने उसे राजा को बेवकूफ बनाने — और स्वयं की रक्षा करने — का ज्ञान दिया। फिर वह अदुल्लाम की गुफा में गया जहाँ परमेश्वर ने उसे लगभग 400 लड़ने वाले जवानों के समूह के साथ आशीषित किया। लेकिन, शाऊल के विपरीत जिसने हर उस व्यक्ति को भरती किया जिसे वह कर सकता था, दाऊद ने इन सेनानियों को भरती नहीं किया। वे सभी स्वेच्छा से उसके पास आए। दाऊद ने अपने माता व पिता को मोआब के मिसपा में सुरक्षा के लिए ले जाने के द्वारा भी परमेश्वर की आत्मा की आशीष को दर्शाया। वह वहाँ तब तक रहा जब तक भविष्यद्वक्ता गाद ने उसे यहूदा जाने के लिए न कहा, और उसने विनम्रतापूर्वक परमेश्वर की आज्ञा का पालन किया।

इस सब के दौरान, शाऊल पर बुरी आत्मा का अभिशाप स्पष्ट था। गिबा में, शाऊल ने उसका समर्थन न करने के लिए अपने पुरुषों के खिलाफ हंगामा किया। इसलिए, एदोमी दोएग ने शाऊल को बताया कि दाऊद नोब में था। लेकिन जब शाऊल ने जाना कि दाऊद पहले ही चला गया है, और अहीमेलेक ने उसकी मदद की थी, तो वह क्रुद्ध हो गया और उसने दोएग को सभी याजकों को मारने की आज्ञा दी। जैसा कि हम 22:18 में पढ़ते हैं, "तब एदोमी दोएग ने मुड़कर याजकों को मारा, और उस दिन सनीवाला एपोद पहिने हुए पचासी पुरुषों को घात किया।" शाऊल ने फिर नोब में स्त्रियों और बाल-बच्चों समेत सभी व्यक्तियों एवं जानवरों को मार डाला। सिर्फ अहीमेलेक के पुत्रों में से एक एब्यातार याजक, बच निकला, और वह दाऊद और उसके व्यक्तियों से जा मिला।

दाऊद और एब्यातार ने यहूदा में तब तक एक साथ यात्रा की, जब तक दाऊद को पता नहीं चला कि पलिश्ती लोग कीला के लोगों को तंग कर रहे थे। शाऊल के विपरीत, दाऊद ने यहोवा से पूछा कि उसे क्या करना चाहिए। परमेश्वर ने उत्तर दिया कि उसे पलिश्तियों से कीला का बचाव करना चाहिए। और परमेश्वर ने दाऊद को जीत के साथ आशीषित किया। इस बीच, परमेश्वर ने एब्यातार को यह बताकर भी आशीष दी कि शाऊल कीला को आ रहा था। इसलिए, दाऊद ने याजक को बुलाया और एक बार फिर मार्गदर्शन के लिए प्रार्थना की। परमेश्वर ने प्रकट किया कि दाऊद को चले जाना चाहिए और शाऊल और उसकी सेना वापस लौट गई।

23:14-28 में, शाऊल की प्रत्यक्ष शत्रुता के चौथे और अंतिम भाग में, जंगल में दाऊद के खिलाफ कई परस्पर संबंधित आक्रमण शामिल हैं। कीला को छोड़ने के बाद, दाऊद ने जीप के जंगल में, और बाद में माओन के जंगल के अधिक दक्षिणी क्षेत्र की यात्रा की, जहाँ शाऊल ने फिर उसका पीछा किया।

इस भाग की शुरूआत शाऊल पर बुरी आत्मा के अभिशाप और दाऊद पर परमेश्वर की आशीष, दोनों पर ध्यान देते हैं। हमें बताया गया है कि शाऊल ने लगातार दाऊद का पीछा किया, लेकिन परमेश्वर ने उसे दाऊद को पकड़ने की अनुमति कभी नहीं दी। और 23:17 के अनुसार, योनातन दाऊद के पास आया और उसे आश्वस्त करते हुए कहा, “मत डर, क्योंकि तू मेरे पिता शाऊल के हाथ में न पड़ेगा। तू ही इस्राएल का राजा होगा।”

इस बीच जीप के जंगल से कुछ लोगों ने शाऊल को दाऊद तक ले जाने की पेशकश की। इसलिए, दाऊद और उसके आदमी मोआन के जंगल में दक्षिण की ओर चले गए। शाऊल, दाऊद को पकड़ने के बहुत करीब पहुँच गया, लेकिन जैसे ही शाऊल ने दाऊद को घेरा, परमेश्वर ने दाऊद को एक बार फिर आशीषित किया। शाऊल को सूचना मिली कि पलिश्ती लोग इस्राएलियों पर दूसरे स्थान पर अक्रमण कर रहे थे, और शाऊल को अपना पीछा छोड़ने और उनसे लड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा।

**शत्रुता में कमी (23:29–27:12)**। दाऊद के प्रति शाऊल की शत्रुता की शुरूआत और बढ़ावे को देख लेने के बाद, हमें 23:29–27:12 में, शाऊल की शत्रुता में कमी के बारे में बात करनी चाहिए। ये वृत्तांत उजागर करते हैं कि कैसे दाऊद की ईमानदारी ने शाऊल को प्रेरित किया कि वह दाऊद को शांति से रहने दे।

पहला भाग 23:29–24:22 में, दाऊद का एनगदी में प्रसिद्ध प्रकरण है। पलिश्तियों से लड़ने के लिए शाऊल के जाने के बाद, दाऊद पूर्व में उस स्थान पर गया, जिसे एनगदी कहा जाता था। लेकिन जब शाऊल की लड़ाई समाप्त हो गई, तो वह एक बार फिर दाऊद का पीछा करने लगा। मार्ग में, एक गुफा में स्वयं शाऊल दिशा फिरने को रुका। और परमेश्वर के प्रावधान में, दाऊद ठीक उसी गुफा के भीतर छिपा हुआ था। दाऊद आसानी से शाऊल को मार सकता था, लेकिन इसके विपरीत, उसने सिर्फ शाऊल के बागे की छोर को काट लिया। और यह बताने के लिए कि पाप के प्रति दाऊद का विवेक कितना संवेदनशील था, हमारे लेखक ने बताया कि यहोवा के अभिषिक्त के खिलाफ इस छोटे कार्य के बारे में भी दाऊद ने दोषी होंना न चाहा। इसलिए, अगली सुबह, दाऊद ने दूर से शाऊल को पुकारा। उसने इस बात को स्पष्ट कर दिया कि उसने शाऊल के जीवन को बख्श दिया था, और वह उसे हानि नहीं पहुँचाएगा। और फिर, उल्लेखनीय स्पष्टता के एक संक्षिप्त क्षण में, शाऊल ने दाऊद से 24:17 में कहा, “तू मुझ से अधिक धर्मी है; तू ने तो मेरे साथ भलाई की है, परन्तु मैं ने तेरे साथ बुराई की।” और 24:20 में शाऊल ने स्वयं स्वीकार किया, “और अब, मुझे मालूम हुआ है कि तू निश्चय राजा हो जाएगा, और इस्राएल का राज्य तेरे हाथ में स्थिर होगा।”

दूसरे भाग, 25:1-44 में, हमारे लेखक ने बताया कि पारान के जंगल में दाऊद और अबीगैल के साथ क्या हुआ। इस प्रकरण में शाऊल का उल्लेख नहीं किया गया है, लेकिन हमारे लेखक ने इस टिप्पणी के साथ शुरू किया कि शमूएल की मृत्यु हो गई और कि पूरे इस्राएल ने उसके लिए विलाप किया। बहुत संभावना है, कि उसने इसका उल्लेख इस बात को इंगित करने के लिए किया कि दाऊद और शाऊल दोनों एक अस्थायी शांति की शर्त के तहत शमूएल के दफन में मौजूद थे। यह तथ्य अपने आप में उजागर करता है कि कैसे शाऊल की शत्रुता कम हो रही थी। लेकिन दाऊद कोई चूक नहीं करना चाहता था और तुरंत शाऊल से दूर दक्षिणी यहूदा के रेगिस्तान इलाकों में, परान के जंगलों को भाग गया। वहाँ, दाऊद के कार्यों ने एक बार फिर उसकी बेगुनाही की पुष्टि की।

हम अबीगैल नामक एक सुंदर और बुद्धिमान स्त्री और उसके क्रूर एवं दुष्ट पति नाबाल, जिसके नाम का अर्थ “मूर्ख” है, उनके बारे में पढ़ते हैं। दाऊद के पुरुषों द्वारा नाबाल के चरवाहों के साथ अच्छे व्यवहार और जंगल में उन्हें सुरक्षित रखने के बाद, दाऊद ने नाबाल से अपने आदमियों के भरण-पोषण के लिए उपहार मांगा। लेकिन जब नाबाल ने मूर्खतापूर्वक दाऊद के निवेदन को ठुकरा दिया और उसके दूतों का अपमान किया, तो दाऊद ने नाबाल के घर पर हमला करने के लिए अपने आदमियों को तैयार किया। दाऊद को उपहार देने और अपने पति के लिए क्षमा की भीख माँगने के द्वारा, अबीगैल ने अपने पति की



चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट http://thirdmill.org/ पर जाएं।

ओर से हस्तक्षेप किया। उसने विनम्रतापूर्वक दाऊद की भलाई को भी स्वीकार किया। और दाऊद ने परमेश्वर का प्रशंसा की कि उसे बदला लेने से रोक दिया गया था। लगभग दस दिनों के बाद, स्वयं यहोवा ने नाबाल को ऐसा मारा कि वह मर गया। जब दाऊद को नाबाल की मृत्यु का समाचार मिला, तो उसने पद 39 में उत्तर दिया, "धन्य है यहोवा जिसने ... अपने दास को बुराई से रोक रखा।" और इसके तुरंत बाद, परमेश्वर ने दाऊद को आगे और आशीष दी जब अबीगैल उसकी पत्नी बन गई।

> अब, दाऊद ने नाबाल के घराने के लिए बहुत भलाई की थी, जो अबीगैल का पति था। और दाऊद नाबाल से अपेक्षा कर रहा था कि वह दाऊद और उसकी सेना को भोजन देने के मामले में उसकी उदारता का प्रतिफल चुकाएगा। हालाँकि, जब दाऊद ने नाबाल के पास दूतों को भेजा, नाबाल ने दाऊद को भोजन देने से मना कर दिया, और इसलिए दाऊद ने जाकर बदला लेने ... और नाबाल और घर के कुछ सदस्यों को नष्ट करने का निर्णय लिया। अब, कुछ हद तक, अबीगैल को पता चल गया कि यह सब कुछ हुआ था, और उसने जल्दी से कुछ भोजन वस्तुओं के साथ दाऊद से भेंट करने की व्यवस्था की। अब, जब अबीगैल दाऊद से मिली, जो कि एक मिशन पर था — मैं कहना चाहूँगा, बदला लेने का मिशन — अबीगैल विनम्रता के साथ, सक्षम थी, वह दाऊद को बदला न लेने के लिए मनवाने में सफल रही। और उस क्षण पर दाऊद ने उसे सुना, और परिणामस्वरूप दाऊद ने वह उपहार स्वीकार किया जो वह लाई थी और अबीगैल वापस लौट गई ... इस तरह कुछ दिनों बाद परमेश्वर ने नाबाल को ऐसा मारा कि नाबाल मर गया। जब दाऊद ने सुना की अबीगैल अब एक विधवा है, उसने अबीगैल के पास उससे विवाह करने के लिए दूतों को भेजा, और अबीगैल ने दाऊद से विवाह करना स्वीकार किया। इस तरह दाऊद ने अबीगैल से विवाह किया। और मै मानता हूँ, मेरे लिए यहाँ पर सबक है कि बदला लेना हमारा काम नहीं है .... बदला लेना यहोवा का काम है।
>
> — रेव्ह. डा. हम्फ्रे अकोगयेरम

हमारा लेखक फिर 26:1-25 में दूसरी बार जीप के जंगल में दाऊद की ओर मुड़ता है। शाऊल ने एक बार फिर दाऊद का पीछा किया। लेकिन दाऊद गलत कामों को न करने से निर्दोष बना रहा। एक रात, दाऊद ने शाऊल के शिविर में प्रवेश किया और शाऊल को उसके सिर के पास भाले के साथ सोता पाया। पहले के समान, दाऊद ने शाऊल को हानि पहुँचाने से इनकार किया, लेकिन उसने शाऊल का भाला और पानी की सुरही ले ली। दूसरे दिन, परमेश्वर ने दाऊद को उसके संयम के लिए आशीष दी। जब दाऊद और शाऊल दूर से बोल रहे थे, तो शाऊल ने दाऊद की निर्दोषता को स्वीकार किया और पद 25 में यह कहते हुए, दाऊद पर एक आशीष की घोषणा की, "हे मेरे बेटे दाऊद, तू धन्य है! तू बड़े बड़े काम करेगा और तेरे काम सफल होंगे।"

शाऊल की शत्रुता में कमी का अंतिम भाग 1 शमूएल 27:1-12 में दाऊद का पलिश्तियों के यहाँ जाने को बताता है। दाऊद एक बार फिर शाऊल से भागा, इस बार पलिश्तियों के देश में। दाऊद के निर्णय पर परमेश्वर की आशीष स्पष्ट है क्योंकि, यह जानने के बाद कि दाऊद गत नगर को भाग गया था, शाऊल ने उसका पीछा करना बंद कर दिया। परमेश्वर ने दाऊद को अन्य तरीकों से भी आशीषित किया। पलिश्ती राजा, आकीश ने, दाऊद को उसके निवास के लिए सिकलग नगर दे दिया। दाऊद सिकलग में एक साल और चार महीने रहा और वहाँ से कई सफल चढ़ाईयों को अंजाम दिया। अब, हमारा लेखक यह बताने के लिए सावधान था कि कभी भी दाऊद ने किसी भी परमेश्वर के लोगों को नुकसान नहीं पहुँचाया। इसके

बजाय, उसने केवल परमेश्वर के शत्रुओं पर हमला करने में पलिश्तियों की मदद की। फिर भी, आकीश ने यह सोचकर दाऊद पर भरोसा किया, कि इस्राएल उससे नफरत करता है और कि दाऊद के पास जीवन भर उसके प्रति वफादार बने रहने के अलावा और कोई विकल्प नहीं होगा।

**शत्रुता के दुष्परिणाम (1 शमूएल 28:1–2 शमूएल 1:27)** दाऊद के खिलाफ शाऊल की आक्रामकता की पृष्ठभूमि, बढ़ावा और कमी को देखने के बाद, शमूएल का लेखक 1 शमूएल 28:1–2 शमूएल 1:27 में शाऊल की शत्रुता के दुष्परिणाम की ओर मुड़ा। इन अध्यायों में, पलिश्तियों ने इस्राएल के खिलाफ युद्ध किया, और हमारे लेखक ने इस बात पर ध्यान केंद्रित किया कि इस समय के दौरान कैसे परमेश्वर ने दाऊद को आशीष दी और शाऊल को अभिशाप दिया।

शाऊल की शत्रुता के दुष्परिणाम का पहला भाग 28:1-25 में पलिश्तियों के साथ युद्ध की तैयारियों पर ध्यान केंद्रित करता है। अपने सामान्य पैटर्न से हटकर, शमूएल के लेखक ने दाऊद और शाऊल को शामिल करने वाले दो प्रकरणों को आपस में यह दिखाने के लिए बुना कि ये घटनाएँ एक ही समय पर हुईं थीं।

सबसे पहले 28:1, 2 में, हम युद्ध के लिए दाऊद की तैयारियों के एक संक्षिप्त प्रकरण को पाते हैं। ये घटनाएँ पलिश्ती नगर गत में हुईं थीं। पलिश्तियों के राजा ने दाऊद से कहा कि उसे और उसके पुरुषों को इस्राएल के खिलाफ युद्ध में पलिश्ती सेना के साथ शामिल होना होगा। दाऊद ने आकीश को योजना से सहमत होने का आभास देकर उसको धोखा दिया। प्रसन्न होकर, आकीश ने दाऊद से कहा कि वह जीवन भर के लिए राजा का अंगरक्षक होगा। शमूएल के लेखक ने एक बाद के प्रकरण तक पलिश्तियों के साथ दाऊद की भागीदारी पर तनाव को हल करने के लिए इंतजार किया।

दूसरा, 28:3-25 में, हमारा लेखक युद्ध के लिए शाऊल की तैयारियों की ओर मुड़ा। शमूएल के दिनों में, शाऊल ने सभी ओझों और भूत-सिद्धि करनेवालों को इस्राएल देश से निकाल दिया था। लेकिन पलिश्ती सेना की दृष्टि ने शाऊल को भय से अभिभूत कर दिया। उसने परमेश्वर से पूछताछ की, लेकिन परमेश्वर ने उसे उत्तर नहीं दिया। इसलिए, शाऊल ने अकल्पनीय काम किया। उसने एक ओझा से परामर्श किया। अब, लैव्यवस्था 20:27 इंगित करता है कि भूत-सिद्धि — मृतकों से परामर्श करना — मूसा की व्यवस्था में मृत्यु-दंड वाला अपराध था। लेकिन शाऊल ने एन्दोर के ओझा को शमूएल को बुलाने का आदेश दिया। वह आत्मा जो प्रकट हुई क्या वह वास्तव में शमूएल था या कोई शैतानी धोखा, लेकिन आत्मा ने शाऊल को वह बात बताई जो वह कभी नहीं सुनना चाहता था। पद 17 में, आत्मा ने शमूएल के पहले वाले वचनों को यह कहते हुए दोहराया, "उसने तेरे हाथ से राज्य छीनकर तेरे पड़ोसी दाऊद को दे दिया है।" और पद 19 में, आत्मा ने कहना, जारी रखा, "फिर यहोवा तुझ समेत इस्राएलियों को पलिश्तियों के हाथ में कर देगा। और तू अपने बेटों समेत कल मेरे साथ होगा।" पलिश्तियों के साथ लड़ाई में शाऊल और उसके पुत्रों को परमेश्वर ने मृत्यु दंड दिया।

इस प्रभाग का अगला भाग 29:1–31:13 में, पलिश्तियों के साथ युद्ध में दाऊद और शाऊल की लड़ाईयों पर ध्यान केंद्रित करता है। 29:1–30:31 में कहानी दाऊद की जीतों को प्रस्तुत करती है। आपको याद होगा कि 28:1 में, पलिश्ती राजा आकीश ने जोर दिया कि दाऊद इस्राएल के साथ युद्ध में उसके साथ रहे। लेकिन इन अध्यायों में, पलिश्तियों के सेनापति ने दाऊद को उनके साथ ले जाने से मना कर दिया। इसलिए, दाऊद मुड़कर सिकलग चला गया और शाऊल के खिलाफ युद्ध में कभी नहीं गया। जब दाऊद सिकलग पहुँचा, तो उसे पता चला कि अमालेकियों ने नगर को जला दिया था और उसकी पत्नियों को बंदी बना लिया था। दाऊद ने अमालेकियों पर आक्रमण किया और उनमें से प्रत्येक को मार डाला — कुछ ऐसा जिसे शाऊल ने करने से इनकार कर दिया था। और परमेश्वर के सम्माननीय अगुवे के रूप में कार्य करते हुए, दाऊद ने उन सभी के साथ जो उसके पीछ चले थे लड़ाई की लूट को साझा किया।

इसके विपरीत, 31:1-13 में हमारा लेखक पलिश्तियों के साथ युद्ध में शाऊल की मृत्यु की ओर मुड़ा। गिलबो पहाड़ पर, परमेश्वर ने अपने अभिशापों को उँडेला, जिनकी चेतावनी उसने दी थी कि वे आ



चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट http://thirdmill.org/ पर जाएं।

रहे हैं। योनातन सहित, शाऊल के तीनों पुत्र युद्ध में मारे गए। फिर, जब एक तीरंदाज के तीर से शाऊल गंभीर रूप से घायल हो गया, तो हम पद 4 में पढ़ते हैं कि “तब शाऊल अपनी तलवार खड़ी करके उस पर गिर पड़ा।” पलिश्तियों ने शाऊल और उसके पुत्रों के शवों को बेथ-शान की दीवार पर बान्ध कर अपमानित किया। लेकिन गिलादवाले याबेश के शुरवीर लोग रात में गए, शवों को लिया, और उन्हें जला दिया और उनकी हड्डियों को दफना दिया।

शमूएल का लेखक फिर शाऊल की शत्रुता के दुष्परिणाम के अपने विवरण को 2 शमूएल 1:1-27 में युद्ध के बाद दाऊद की प्रतिक्रिया की ओर मुड़ने के द्वारा समाप्त करता है। यह भाग सिकलग में अपने घर लौटने के बाद शाऊल और उसके पुत्रों की मौत पर दाऊद की धर्मी प्रतिक्रिया पर ध्यान केंद्रित करता है।

सबसे पहले, 1:1-16 में, दाऊद ने उस अमालेकी दूत को पुरस्कृत करने के बजाय मार डाला, जिसने शाऊल को मारने का दावा किया। फिर, 1:17-27 में, दाऊद ने योनातन और शाऊल का मृत्यु पर सार्वजनिक रूप से शोक व्यक्त किया। जैसा कि पद 19 में वह रोकर चिल्लाया, “हे इस्राएल, तेरा शिरोमणि [इस्राएल का राजा] तेरे ऊँचे स्थान पर मारा गया!” और पद 19, 25 और 27 में, उसने शाऊल और योनातन को प्रसिद्ध परिचारक दोहराने के द्वारा सम्मानित किया, “हाय, शूरवीर कैसे गिर पड़े हैं!” इस तथ्य के बावजूद कि शाऊल ने उसे बिना किसी कारण के सताया था, दाऊद ने अंत तक शाऊल के विनम्र सेवक के रूप में अपनी सत्यनिष्ठा को बनाए रखा।

अब जबकि हमने शाऊल की असफल राजशाही की संरचना एवं विषयवस्तु पर विचार कर लिया है, तो अब हम अपने जीवनों के लिए इसकी प्रासंगिकता के बारे में पूछने की स्थिति में हैं। हमें शमूएल की पुस्तक के इस भाग से मसीही अनुप्रयोगों को कैसे बनाना है?

## मसीही अनुप्रयोग

मसीह के अनुयायियों के रूप में शमूएल के दूसरे भाग के कई पहलू, हमारे जीवनों से अलग प्रतीत होते हैं। हम पलिश्तियों और अन्य प्राचीन लोगों के साथ युद्ध नहीं लड़ रहे हैं। हम शाऊल और दाऊद के बीच संघर्ष में शामिल नहीं हैं। इन घटनाओं का हमसे क्या लेना-देना है? सुनिश्चित होने के लिए, हम में से अधिकांश कुछ प्रासंगिक ईश्वरीय-ज्ञान वाले और नैतिक सिद्धांतों को यहाँ वहाँ देख सकते हैं। लेकिन हमारे मसीही अनुप्रयोग के साथ शमूएल के लेखक के उन मुख्य उद्देश्यों को संरेखित करना ज्यादा फलदायक है जब उसने पहली बार शाऊल के असफल राजशाही के बारे में लिखा था।

शाऊल की असफल राजशाही के मसीही अनुप्रयोग का पता लगाने के कई तरीके हैं। लेकिन यहाँ अपने उद्देश्यों के लिए, हम एक बार फिर परमेश्वर की वाचाओं और परमेश्वर के राज्य के विषयों पर गौर करेंगे। आइए, इस बात से शुरू करें कि कैसे परमेश्वर की वाचाएँ शमूएल की पुस्तक के इस भाग की ओर हमें एक महत्वपूर्ण अभिविन्यास प्रदान करते हैं।

### परमेश्वर की वाचाएँ

शाऊल की असफल राजशाही की घटनाएँ तब हुईं, जब परमेश्वर के साथ इस्राएल के संबंध मुख्यतः मूसा के साथ परमेश्वर की वाचा द्वारा संचालित होते थे। परमेश्वर की परोपकारिताओं, कृतज्ञतापूर्ण निष्ठा के मानकों — विशेषकर आराधना और राजशाही के लिए परमेश्वर की व्यवस्था के संबंध में — और अभिशापों एवं आशीषों के परिणामों के बारे में जो कुछ शमूएल के लेखक ने लिखा, उसे मूसा की व्यवस्था ने संचालित किया। लेकिन जैसा कि हमने इस अध्याय में देखा, शमूएल की पुस्तक को तब लिखा गया था जब परमेश्वर ने दाऊद के साथ अपनी वाचा को स्थापित कर लिया था। इसलिए, मूल



चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट http://thirdmill.org/ पर जाएं।

श्रोताओं से अपेक्षा थी कि वे इन अध्यायों को अपने जीवनों में उन सभी बातों के प्रकाश में लागू करेंगे जिन्हे परमेश्वर ने दाऊद के घराने की केंद्रियता के विषय में प्रकट किया था।

बहुत कुछ इसी तरह, मसीह के अनुयायियों के रूप में, हमें अपने स्वयं के दिनों के प्रकाश में शाऊल की असफल राजशाही की कहानी को लागू करना चाहिए। हम उस समय के बाद रहते हैं जब परमेश्वर ने मसीह में नई वाचा को स्थापित किया है। और यह नई वाचा दाऊद के महान पुत्र के रूप में यीशु की केंद्रियता की ओर परमेश्वर की पहली वाली वाचाओं की गतिशीलताओं को पुनः संगठित करती है। इस कारण से, जब हम इन अध्यायों को लागू करते हैं, तो हमारा मार्गदर्शन करने के लिए हमें नए नियम में परमेश्वर के प्रकाशन पर भरोसा करना चाहिए।

> पवित्र शास्त्र को पढ़ते समय, यह समझना महत्वपूर्ण है कि पवित्र शास्त्र एकदम से हम तक नहीं पहुँचा है। यह एक प्रगतिशील प्रकाशन है। परमेश्वर ने प्रभु यीशु मसीह में परिपूर्ण हो रही, बाइबल की वाचाओं के माध्यम से, समय के साथ अपनी योजना को हमारे लिए प्रकट करने का चुनाव किया है। इस बात को ध्यान में रखते हुए, हमें यह एहसास करना है कि जब हम पवित्र शास्त्र को अपने जीवनों में लागू करते हैं, तो विशेष रूप से मसीही होने के नाते, अनुप्रयोग में पवित्र शास्त्र के सभी पहलू, कहिए, जैसे यह पुरानी वाचा के तहत या पुराने नियम के युग में होते थे, हमारे ऊपर ठीक उसी तरह से लागू नहीं होते हैं। जब हम फिर सोचते हैं कि हमारे लिए क्या लागू होता है, तो हमें यह देखना चाहिए कि पुराना नियम कैसे विशेष रूप से यीशु मसीह में पूरा होता है। यही वह दृष्टिकोण और मापदंड है जिसके द्वारा हम फिर कहते हैं, "यह लागू होता है और यह लागू नहीं होता।" ... यह सब मसीह में अपनी पूर्णता तक पहुँचता है। यह हमारे लिए उसमें और उसके माध्यम से लागू होता है। और जब हम पवित्र शास्त्र के किसी भी भाग को पढ़ते हैं तो यही वह मूल सिद्धांत है जिसका हमें पालन करना है, उस हिस्से को छुटकारे के इतिहास में उसके स्थान पर रखना, इस बात को देखना कि कैसे इसे यीशु मसीह में परिपूर्णता तक लाया गया है, और परमेश्वर के लोगों के रूप में जो उस प्रकाश में रहते हैं जो यीशु ने किया है, कैसे यह हम तक पहुँचा है।
>
> — डॉ. स्टीफन जे. वेल्लम

पहले स्थान पर, पिछले विभाजन के समान, जब शमूएल का यह भाग दिव्य परोपकारिता पर ध्यान आकर्षित करता है, तो हम मसीह में परमेश्वर की इससे भी अधिक परोपकारिता को पहचानते हैं। हम दिव्य परोपकारिता तब देखते हैं जब परमेश्वर ने शाऊल को उसकी राजशाही प्रदान की, और फिर इससे भी अधिक परोपकारिता जब परमेश्वर ने शाऊल को दाऊद से प्रतिस्थापित किया। लेकिन नया नियम सिखाता है कि परमेश्वर ने मसीह में बहुत अधिक परोपकारिता दिखाई। आज, हमारे पास इस असाधारण परोपकारिता को स्वीकार करने के अवसर हैं — न सिर्फ वह परोपकारिता जो परमेश्वर ने स्वयं मसीह को दिखाई, बल्कि वह परोपकारिता भी जिसे वह उन सभी को दिखाता है जो दिन-प्रतिदिन मसीह का अनुसरण करते हैं।

दूसरे स्थान पर, जब हम शाऊल के दिनों में मानवीय निष्ठा पर विचार करते हैं तो बहुत कुछ उसी के समान सच है। ये अध्याय परमेश्वर के प्रति शाऊल की निष्ठावान होने की विफलता को दिखाते हैं। उसने बार-बार परमेश्वर की आराधना को उपेक्षित और दूषित किया। और बार-बार उसने शाही अधिकार के लिए मूसा के नियमों का उल्लंघन किया। शाऊल की असफलताएँ, परमेश्वर की आराधना के प्रति यीशु की दोषरहित भक्ति, और दाऊद के सिद्ध पुत्र के रूप में उसके निष्कलंक शासन के ठीक विपरीत है। वे

आत्मा में एवं सच्चाई में परमेश्वर की आराधना की हमारी जिम्मेदारी, और हमारे स्वयं के जीवनों में यीशु के सिद्ध धर्मी शासन का अनुकरण करने की ओर भी इंगित करते हैं।

लेकिन हमारी पुस्तक का यह भाग दाऊद की विश्वासयोग्य आराधना की ओर भी ध्यान आकर्षित करता है। मसीही होने के नाते, हमें याद दिलाया गया कि जो आराधना यीशु पिता के लिए करता है वह दाऊद की आराधना से कहीं अधिक है। और मसीह में हमारी आराधना को भी दाऊद की आराधना से अधिक होना चाहिए। इसके अतिरिक्त, हर बार जब हमारे लेखक ने दाऊद द्वारा शाही अधिकार के सम्मानपूर्ण क्रियान्वयन की ओर इशारा किया, तो हम यीशु की सिद्ध राजशाही में आनंद लेते हैं और सीखते हैं कि कैसे हमें उसके उदाहरण का पालन करना है।

> हम देखते हैं ... शमूएल की पुस्तक में, कि कैसे यहोवा ने अभिमानी शाऊल से सिंहासन को छीना, जो सोच रहा था कि वह एक महान राजा था, और उसे दाऊद को दिया, जिसे उसने राजा होने के लिए भेड़ों की चरवाही से उठाया। भले ही 1 शमूएल  दाऊद की राजशाही, महानता और परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारिता पर ध्यान केंद्रित करता है, 2 शमूएल में हम देखते हैं कि दाऊद एक आदर्श राजा नहीं था। हम उसके पापों एवं कमजोरियों को देखते हैं। यह हमें बताता है कि इस्राएल के लोगों को अभी भी ऐसे सच्चे उद्धारकर्ता की आवश्यकता है जो पूरी रीति से हमारी लज्जा को दूर करेगा, और यह व्यक्ति यीशु मसीह है।
>
> — श्री शेरिफ अतेफ फाहिम, अनुवादित

तीसरे स्थान पर, ये अध्याय अभिशापों एवं आशीषों के परिणामों की ओर ध्यान आकर्षित करते हैं। शाऊल की अवज्ञा से उत्पन्न अभिशाप हमें मसीह की ओर आकर्षित करते हैं जिसने उन सभी के लिए अनंत अभिशापों को सहा जो उस पर भरोसा करते हैं। और ये हमें चेतावनी भी देते हैं कि, अभी भी, जब हम परमेश्वर से दूर जाते हैं तो वह अपनी कलीसिया को अस्थायी श्रापों से अनुशासित करता है। इसी तरह, जब हम उन आशीषों को देखते हैं जिन्हें दाऊद ने परमेश्वर के प्रति अपनी विश्वासयोग्य सेवा के लिए प्राप्त किया, तो हम मसीह का सम्मान करते हैं जो परमेश्वर के प्रति अपनी आज्ञाकारिता के लिए अथाह आशीषों को प्राप्त करता है। और हमें आज परमेश्वर की अस्थायी आशीषों और आने वाले संसार में उसकी अनंत आशीषों को पाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

परमेश्वर की वाचाओं की गतिशीलताओं की ओर शाऊल की असफल राजशाही के हमारे मसीही अनुप्रयोगों को अनुकूल बनाने के अलावा, हमें इन अध्यायों को मसीह में परमेश्वर के राज्य के विकास के प्रकाश में भी लागू करना चाहिए।

## परमेश्वर का राज्य

जैसा कि हमने देखा, शमूएल के लेखक ने शाऊल की असफल राजशाही के बारे में लिखा ताकि उसके मूल श्रोता शाऊल के घराने के लिए सारी आशाओं को छोड़ दें और परमेश्वर के राज्य के लिए अपनी आशाओं को दाऊद के घराने के धर्मी शासन पर लगाएं। और इस कारण से, हमें भी अपनी आशाओं को विशेष रूप से दाऊद के एकमात्र धर्मी शाही वंशज यीशु पर रखना चाहिए। सिर्फ यीशु ही परमेश्वर के उस राज्य के लिए आशाओं को पूरा करता है जिसे हमारे लेखक ने शाऊल की असफल राजशाही की अपनी कहानी में बताया है।

लेकिन, जैसा कि हमने पहले बताया, यीशु तीन चरणों में राज्य को लाते हैं। उसने अपने पहले आगमन में अपने राज्य के उद्घाटन के साथ शुरूआत की। हम आज उसके राज्य की निरंतरता में रहते हैं

जब यह पूरे कलीसियाई इतिहास में दृढ़ बनी रहती है। और हम उसके राज्य की परिपूर्णता को युग के अंत में देखेंगे जब वह महिमा में वापस आएगा।

पहले स्थान पर, शमूएल के मूल श्रोताओं ने शाऊल की विफलताओं से सीखा कि आशा सिर्फ दाऊद के घराने में ही मिल सकती है। इसी तरह, हम मसीह के राज्य के उद्घाटन पर पीछे दृष्टि डालते हैं, जहाँ यीशु ने — अपने आश्चर्यकर्मों, अपनी मृत्यु, अपने पुनरुत्थान, और अपने स्वर्गारोहण के द्वारा — संदेह से परे प्रमाणित किया कि सिर्फ वही राजा है जो पृथ्वी पर परमेश्वर के महिमामय राज्य को लाएगा।

दूसरे स्थान पर, शमूएल के मूल श्रोताओं के दिनों में, परमेश्वर ने दाऊद की असफलताओं के बावजूद उसके राजवंश को बनाए रखा। और, हमें यह जानने का सौभाग्य है कि 2000 वर्षों से अधिक के लिए, परमेश्वर के राज्य की निरंतरता के दौरान, परमेश्वर की प्रतिज्ञाएं विफल नहीं हुए हैं। मसीह ने — जो दाऊद का धर्मी पुत्र है — बार-बार साबित किया है कि पृथ्वी की छोर तक राज्य को फैलाने के लिए परमेश्वर ने उसका अभिषेक किया। हालाँकि कई लोग अभी भी अन्य मार्गों का अनुसरण करते हैं, फिर भी मसीह अपनी आत्मा की सामर्थ्य और सुसमाचार प्रचार के द्वारा पूरे संसार में परमेश्वर के शत्रुओं को पराजित करना और परमेश्वर की आशीषों को उँडेलना जारी रखता है।

और तीसरे स्थान पर, शमूएल के लेखक ने अपने मूल श्रोताओं से भविष्य पर दृष्टि रखने और दाऊद के सिंहासन की पूर्ण बहाली के लिए आह्वान किया। इसी तरह, शाऊल की असफल राजशाही का हमारे लेखक का विवरण, हमसे हमारे युग की उस परिपूर्णता की ओर दृष्टि करने के लिए आह्वान करता है जब मसीह वापस आएगा। नया नियम हमें आश्वस्त करता है कि, उस समय, प्रत्येक प्राणी को यह स्पष्ट हो जाएगा कि वास्तव में, सिर्फ मसीह को, सृष्टि पर राज करने के लिए चुना गया है। जैसा कि पौलुस फिलिप्पियों 2:10, 11 में लिखता है, उस दिन, "कि जो स्वर्ग में और पृथ्वी पर और पृथ्वी के नीचे हैं, वे सब यीशु के नाम पर घुटना टेकें; और परमेश्‍वर पिता की महिमा के लिये हर एक जीभ अंगीकर कर ले कि यीशु मसीह ही प्रभु है।"

> इसलिए, नए नियम में हम देखते हैं कि परमेश्वर का राज्य अब पुरे संसार में फैली हर जाति, राष्ट्र और भाषा में से उसके लोगों के ऊपर मसीह के शासन के माध्यम से मौजूद है, और यह एक विशेष स्थान, भौगोलिक स्थान पर स्थित नहीं है, लेकिन हमारे आत्मिक घर, स्वर्ग में स्थित है। लेकिन फिर नया नियम हमें झलक देता है कि जब यीशु वापस आएगा तो परमेश्वर का राज्य किसके समान होगा, और जबकि वह राज्य अभी इस संसार में कहीं छिपा हुआ है, यह स्पष्ट रूप से दिखेगा जब मसीह वापस आएगा — "वे सब ... घुटना टेकें ... हर एक जीभ अंगीकर कर ले कि यीशु मसीह ही प्रभु है" — और परमेश्वर अपने लोगों के ऊपर जो उसे जानते हैं और उसे अब्बा कह कर बुलाते हैं अपने राजा के माध्यम से स्वर्गीय नए यरूशलेम में सिद्धता से राज करेगा।
>
> — डॉ. कॉन्स्टेन्टीन कैम्पबेल

शमूएल के लेखक ने सावधानीपूर्वक दिखाया कि जब इन घटनाओं ने दाऊद के राज्य को जन्म दिया तो इस्राएल ने गलत मोड़ नहीं लिया था। इसके विपरीत, परमेश्वर ने स्वयं मार्ग में प्रत्येक कदम को निर्देशित किया। और शमूएल की पुस्तक के ये अध्याय हमें आश्वस्त करते हैं कि परमेश्वर ने न सिर्फ इस्राएल के राजा के रूप में दाऊद को ऊँचा उठाने, बल्कि संसार के राजा के रूप में मसीह को ऊँचा उठाने के लिए, इन सभी घटनाओं को निर्देशित किया।

## उपसंहार

शमूएल और शाऊल के इस अध्याय में, हमने देखा कि कैसे शमूएल के लेखक ने उन कई घटनाओं का पता लगाया जिनके कारण इस्राएल के राजा के रूप में दाऊद की स्थापना हुई। हमने यह पता लगाया कि कैसे उसने अपनी पुस्तक के पहले भाग में राजशाही के लिए शमूएल की प्रस्तावना को प्रस्तुत किया और कैसे उसने अपनी पुस्तक के दूसरे भाग में शाऊल की असफल राजशाही को प्रस्तुत किया।

बहुत कुछ उनके समान जिन्होंने शमूएल की पुस्तक को पहले प्राप्त किया, हम इस संसार में कष्टों का सामना करते हैं। और ये कष्ट अक्सर मसीह में परमेश्वर के राज्य की जीत के लिए आशा खोने हेतु हमारी परीक्षा लेते हैं। लेकिन जब हम विनम्रतापूर्वक विचार करते हैं कि कैसे शमूएल और शाऊल के जीवनों के माध्यम से दाऊद के राज के लिए रास्ता तैयार किया गया, तो उसके वचन हमें दाऊद के घराने के धर्मी शासन में भविष्य के लिए अपनी आशाओं को रखने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। दाऊद का धर्मी पुत्र, यीशु, आया है। और उन परीक्षाओं के बावजूद जिनका सामना हम आज करते हैं, हम आश्वस्त हो सकते हैं कि वह उन सभी को जो उस पर विश्वास करते हैं, परमेश्वर के राज्य की परिपूर्णता में अनंत आशीषों की अनंत विरासत देगा।